जय श्रीकृष्ण

श्रीमद्भागवत संदेश

3

शरद अंक

संरक्षक : भागवत भास्कर श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री (ठाकरजी)

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर श्रीठाकुरजी व उनके सुपुत्र चिरंजीव इन्द्रेश एवं भक्तगण

श्रीदुर्गा टैम्पल, न्यू वर्जीनिया में श्रीमद्भागवत सप्ताह के अवसर पर श्रीठाकुरजी एवं भक्तगण

संरक्षक :
- भागवत भास्कर
श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री 'ठाकुरजी'

प्रकाशक :
- श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
रमणरेती, वृन्दावन–281121

सम्पादक :
- पं. श्री किशन लाल जी शास्त्री
भागवत मर्मज्ञ

सह सम्पादक :
- पं. बिष्णु पाठक (सारस्वत), कोलकाता
ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्रज्ञ
दूरभाष: 9331033090

सम्पादक मण्डल
- श्रीदेवकीनन्दन जोशी, कटक
- श्रीमती मीना अग्रवाल, दिल्ली
- श्री विनय पाठक, मथुरा
- श्रीमती बृजबाला गौड़, वृन्दावन
- डॉ. भागवत कृष्ण नांगिया, वृन्दावन

पत्राचार:
- पं. श्रीहरीशंकर उपाध्याय
श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
श्रीभागवत कृपा निकुंज
रमणरेती, वृन्दावन–281121 (मथुरा), उ.प्र.
दूरभाष : 0565–2540857, 9897042861

मुद्रण–संयोजन :
- श्रीहरिनाम प्रेस
बाग बुन्देला, लोई बाजार
वृन्दावन. फोन : 2442415

श्रीमद्भागवत संदेश

3
शरद अंक

श्रीगोपी गीत

विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद्
वर्षमारुताद् वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद् विश्वतोभयाद्
ऋषभ ते वयं रक्षिता मुहुः।।

श्रीमद्भागवत–10/31/3

सविष नीर से यातुधान से,
मरुत मेघ से सर्प आग से।
तड़ित मात से व्योम भीति से,
वृषभ शंखचूड़ाश्व आदि से।।
ब्रजविलासिनी प्राणनाथ हे,
निज विपत्तियों को कहा कहौं।
तुम हमें सभी शंकटान से,
सतत पालते आ रहे विभो।।

• हिन्दी पद्यानुवाद : श्रीरामानुज शास्त्री जी •

अनुक्रमणिका

पृष्ठ

1 : **श्रीगोपीगीत** : पद्यानुवाद सहित

3 : **सम्पादकीय / सह सम्पादकीय**

4 : **पं. श्रीकृष्णचन्द्रजी (श्रीठाकुरजी)** : एक परिचय

5 : **कर्म की प्रधानता** : पं. श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री

6 : **गोपाल गोविंद** : संकलित

7 : **नवनन्दजी** : पं. श्री किशनलाल जी शास्त्री

12 : **सनातन धर्म भास्कर** : पं. श्रीरामानुज जी शास्त्री

15 : **महारास** : डॉ. भागवत कृष्ण नांगिया

16 : **हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता** : समाचार

18 : **प्रेरणाप्रद व्यक्तित्व** : श्रीठाकुरजी

19 : **नित्य कर्म के कुछ आवश्यक मंत्र**

20 : **धन्या ब्रज वसुन्धरा** : श्री सौरभ गौड़

23 : **श्रेष्ठ भवन की विधा** : पं. श्री बिष्णु पाठक

26 : **वास्तु–एक दृष्टि में**

27 : **श्रीकीर्तिदा वृषभानुकुँवरि श्रीराधा** : कु. दीक्षा शर्मा

29 : **श्रीराधा** : श्रीव्यासदास जी

30 : **श्रीकृष्णप्रिया श्री तुलसी** : श्री गणेशदास जी चुघ

32 : **प्रेमाभक्ति** : डॉ. भागवत कृष्ण नांगिया

34 : **व्रत पर्व 3 नवम्बर से 31 दिसम्बर 09**

38 : **प्रेम प्रचार** : उपलब्ध साहित्य

39 : **श्री कृष्ण प्रेम संस्थान के सेवा प्रकल्प**

40 : **क्रूज़ यात्रा : श्रीमद्भागवत सप्ताह**

भागवत भास्कर श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री 'ठाकुरजी' के आगामी कार्यक्रम

1.	21 अक्टूबर से 27 अक्टूबर 2009	: सूरत
2.	28 अक्टूबर से 4 नवम्बर 2009	: बलसाड़
3.	06 नवम्बर से 14 नवम्बर 2009	: गीता कुटीर, हरिद्वार
4.	26 नवम्बर से 03 दिसम्बर 2009	: चण्डीगड़
5.	11 दिसम्बर से 18 दिसम्बर 2009	: अगरतल्ला
6.	20 दिसम्बर से 27 दिसम्बर 2009	: प्रेम नगर (जनकपुरी), दिल्ली
7.	28 दिसम्बर 2009 से 3 जनवरी 2010	: भागवत धाम, रमण रेती, वृन्दावन
8.	09 जनवरी से 16 जनवरी 2010	: नासिक
9.	19 जनवरी से 26 जनवरी 2010	: शालीमार बाग, नई दिल्ली
10.	28 जनवरी से 04 फरवरी 2010	: कोलकाता

सम्पादकीय

भगवद्रस निमग्न पाठकश्रेष्ठ,

जय श्री कृष्ण।

श्री कृष्ण प्रेम संस्थान की ओर से प्रकाशित श्रीमद्भागवत सन्देश का तृतीय अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुये हमें अतीव प्रसन्नता हो रही है।

प्रथम अंक का विमोचन श्रीधाम वृन्दावन में आयोजित श्रीमद्भागवत सप्ताह आयोजन के मध्य विशाल मंच पर भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। अनेकों भक्तों ने इसकी प्रतियाँ प्राप्तकर सराहना की और हमारा उत्साहवर्धन किया। इस पत्रिका के माध्यम से परमपूज्य श्रद्धेय श्री ठाकुर जी द्वारा प्रसारित भगवद् भक्तिमय कथा-प्रसंगों से तो आप लाभान्वित होंगे ही, साथ ही उनके अलौकिक प्रवचनों के मूलभावों को आत्मसात करके हिन्दू धर्म व संस्कृति के रक्षण और पोषण हेतु प्रेरित व तत्पर भी होंगे।

पत्रिका की शिक्षाप्रद सामग्री और भगवद्भक्तिपरक आलेख, आपके चिन्तन, मनन व स्वाध्याय के लिये उपयोगी सिद्ध होंगे तथा घर-परिवार के वातावरण को सांस्कृतिक प्रदूषण के दानव से भी बचायेंगे, ऐसी हमें आशा है।

श्रेष्ठता की ओर अग्रसर हों। सकारात्मक सोच बनायें। जीवन का उद्देश्य निश्चित करें और संस्कृति संरक्षण हेतु धर्मकार्यों में अग्रसर हो आनन्दमय वातावरण का निर्माण करें।

पं. किशन लाल शास्त्री
भागवत मर्मज्ञ

सह सम्पादकीय

श्रीकृष्ण प्रेमी भक्तगण,

राधा माधव की कृपा एवं आपके सहयोग से प्रेरित हो श्रीमद्भागवत सन्देश का तृतीय अंक ''शरद'' प्रस्तुत करते हुए अत्यधिक आनन्द की अनुभूति हो रही है। पत्रों के माध्यम से अनेकानेक सुझाव एवं बहुत से शिक्षाप्रद लेख संस्थान को प्राप्त हुए, जिसके लिये संस्थान आपका आभारी है एवं भविष्य में भी इसी प्रकार की स्नेहमयी कामना रखता है।

विगत 1 मई 2009 को कोलकाता प्रवास के मध्य ठाकुर जी ने श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान की कोलकाता शाखा का शुभ उद्घाटन किया, जिसका प्रथम दायित्व आप भक्तगणों को (विशेष कर पूर्वी भारत एवं नेपाल) संस्थान की धार्मिक गतिविधियों से अवगत कराना रहेगा।

आदरणीय श्री ठाकुर जी एवं पितातुल्य पं. श्रीकिशन लाल जी की कृपा दृष्टि रहे तथा आप पाठकवृन्द का सहयोग इसी प्रकार बना रहे,

इसी मंगल कामना के साथ....

पं. बिष्णु पाठक (सारस्वत)
ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्रज्ञ

अति सहज व्यक्तित्व

श्रद्धेय पं. श्रीकृष्णचन्द्र जी शास्त्री (ठाकुरजी)

वैदिक आध्यात्मिक व्यास परम्परा के प्राणाधार श्रद्धेय पं. श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री (ठाकुरजी) का जन्म वृन्दावन के निकट लक्ष्मणपुरा ग्राम (मथुरा, उ.प्र.) में 1 जुलाई 1960 में हुआ। पं. श्रीरामशरण उपाध्याय और श्रीमती चन्द्रवती देवी की इस मेधावी सन्तान ने अपने पितामह पं. भूपदेव उपाध्याय से बचपन में ही रामायण एवं कृष्ण-चरित्र का मनोयोग से श्रवण किया।

श्रीठाकुरजी को प्रारम्भिक शिक्षा के समय ही वीतराग श्रीस्वामी रामानुजाचार्यजी महाराज का सानिध्य मिला, जिनसे इन्हें गीता, बाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भागवत एवं विशिष्टाद्वैत वेदान्त की भी शिक्षा मिली। श्रीजगन्नाथपुरी स्थित श्रीजीयर स्वामी पीठ के मठाधीश श्रीगरुड़ध्वजाचार्यजी से श्रीवैष्णव दीक्षा प्राप्त हुई तथा श्रीवैष्णव दीक्षा देने का अधिकार भी मिला।

व्याकरण में आचार्य और दर्शन शास्त्र में एम.ए. की उपाधि से विभूषित श्रीठाकुरजी ने शास्त्रीय संगीत का भी अध्ययन किया। श्रीठाकुरजी सम्भवत: देश के प्रथम ऐसे व्यास हैं, जो मात्र 48 वर्ष की आयु में श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा के 880 विशाल आयोजन कर चुके हैं। आपकी कथा शैली इतनी सरस एवं सरल है कि सभी श्रेणी के श्रोता आनन्दमग्न हो जाते हैं। आपके निर्देशन में वृन्दावन में श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान की स्थापना हुई, जिसके अन्तर्गत श्रीमद्भागवत धाम में श्रीभागवत एवं वेदादि की नि:शुल्क शिक्षा व्यवस्था की गयी है। भागवतकृपा निकुंज में एक भव्य सत्संग हाल का निर्माण किया गया है जिसमें श्रीमद्भागवत सप्ताह आदि धार्मिक आयोजन एवं अनुष्ठान सम्पन्न होते हैं। एक आतिथेयम् निर्माणाधीन है जो शीघ्र ही अतिथियों के लिए आवासीय सुविधा हेतु उपलब्ध होगा।

'सर्वभूतहितेरता' की भावना से ओत प्रोत श्रीठाकुरजी अति विनम्र एवं मृदुभाषी हैं। आपका व्यक्तित्व भगवत्-भक्तों को अपनी ओर सहज ही आकर्षित करता है। आपकी वाणी में दिव्य ओज है और मिठास ऐसी कि श्रीमद्भागवत कथा के श्रोता आत्मविभोर होकर अपना सर्वस्व अपने प्यारे श्रीकृष्ण को समर्पित करने को तत्पर हो उठते हैं।

श्रीठाकुरजी की शास्त्र सम्मत मान्यता है कि श्रीमद्भागवत श्रीकृष्ण-स्वरूप ही है। विद्वत्-समाज द्वारा 'भागवत भास्कर' उपाधि से सम्मानित श्रीठाकुरजी हिन्दू संस्कृति एवं वैदिक सनातन धर्म के व्यापक प्रचार हेतु मनीला, शिकागो, कनाडा, यूरोप, हांगकांग, अमेरिका तथा लंदन आदि में भी समय-समय पर श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का प्रसाद बाँट रहे हैं।

कर्म की प्रधानता

● श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री (ठाकुरजी)

कर्मणा जायते जन्तुः कर्मणैव विलीयते।
सुखं दुःखं भयं क्षेमं कर्मणौवाभिपद्यते।।

(भा. 10.24.13)

जीव (प्राणी) का जन्म कर्म से होता है, कर्म में ही विलीन होता है। सुख, दुःख, भय, कल्याण सब कुछ कर्म से ही प्राप्त होता है। अतः कर्म ही प्रधान हैं जैसा कर्म हम करते हैं वैसा फल प्राप्त होना ही है। भगवान् वेद की आज्ञा का श्रद्धापूर्वक अनुपालन ही श्रेष्ठ कर्म है। वेद विरुद्ध आचरण ही अकर्म है। अतः सृष्टि के प्रारम्भ से भगवान् परमब्रह्म श्रीमन्नारायण के श्रीमुख से निसृत वेद का आदेश ही मानव मात्र के लिए अध्यादेश है। अतः वैदिक आदेश और परम्परानुसार जीवन जीने वाला ही श्रेष्ठ मानव कहलाता है। वेद में तीन काण्डों का विशेष निर्देश और आदेश है। 1. कर्मकाण्ड, 2. उपासना काण्ड, 3. ज्ञान काण्ड। इनमें कर्मकाण्ड या कर्म योग को मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाने को सर्वोच्च माना गया है। हमारे शास्त्रों में वेद के आदेश को सर्वोच्च मान्यता देते हुए आदेश किया है कि –

ना भुक्तं क्षीयते कर्म जन्म कोटि शतैरपि
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।।

(महाभारत)

मनुष्य द्वारा किए गए कर्म का फल सौ करोड़ जन्मों के बाद भी भोगना पड़ता है। शुभ या अशुभ जो भी कर्म है उसका फल भोगे बिना छुटकारा सम्भव नहीं है। कर्म बुरा है या अच्छा यह सोचने की सामर्थ्य प्रत्येक प्राणी को प्राप्त है। अतः शुभ या अशुभ का विचार करके कर्म करने से मानव सब कुछ प्राप्त करता है। सभी प्रकार की संसिद्धि भी कर्म द्वारा प्राप्त हो सकती है। गीता में गोविन्द का आदेश है–

"कर्मणेव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः"

कर्म से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है इसके प्रमाण जनकादि मनीषि हैं। रामचरितमानस में भी सूत्र है।

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस करहिं सो तस फल चाखा।।

कर्म और भाग्य को लेकर बड़ी चर्चाऐं अनेक वर्षों से चली हैं कि कर्म बड़ा या भाग्य? लेकिन यह तो शास्त्र सम्मत मान्यता है कि कर्म बीज है तो भाग्य उसका फल – बिना बीज के फल मिलना असम्भव और अशक्य है। अतः कर्म निष्ठा से करें तो भाग्य, सद्भाग्य बनेगा। रामचरितमानस में सद्गुरु वशिष्ठ जी महाराज कहते हैं –

सुनहु भरत भावी प्रवल विलखि कहेहु मुनिनाथ।
हानि लाभ जीवन मरन जस अपजस विधि हाथ।।

भावुक होकर भरत जी से वशिष्ठ ने कहा कि भावी बड़ा प्रबल है। हानि, लाभ, जीवन, मरन, यश–अपयश सब विधि (प्रभु) के हाथ है। श्रीभरत ने तुरन्त प्रश्न किया कि जब सब कुछ विधि के हाथ है तो हमारे हाथ क्या है? वशिष्ठ देव ने कहा कि मनुष्य के हाथ कर्म करना ही है। अतः निष्ठा से सत्कर्म करें – कर्म ही हस्त रेखा बदल सकता है और कर्म ही भाग्य का निर्माता है। आज का सत्कर्म कल सद् भाग्य बनेगा। आज का दुष्कर्म कल दुर्भाग्य बनेगा। भीष्म पितामह ने श्रीमद्भागवत में पाण्डवों को

दिए गये अन्तिमोपदेश में स्पष्ट संकेत दिया कि भाग्य नाम की कोई वस्तु स्वतंत्र है ही नहीं अतः मनुष्य को भाग्यवादी न होकर कर्मयोगी होना चाहिए। हमें अपने भूत काल और भविष्यकाल दोनों यदि उत्तम बनाने हैं तो अपने वर्तमान को सुधारो तो दोनों में सुधार सम्भव है। वर्तमान का सत्कर्म – भूत और भविष्य के भाग्य का निर्माता है। गोविन्द भागवत में ही आदेश करते हैं कि निष्ठा से कर्म करने वाला संसार में सब कुछ प्राप्त करता है – भाग्य होगा तो मिलेगा ऐसा मानने वाला तो आलसी ही है। कहते हैं कि –

अस्ति चेदीश्वरः कश्चित् फलरूप्यन्य कर्मणाम्।
कर्तारं भजते सोऽपि न ह्यकर्तुः प्रभुर्हि सः।।

(भा. 10.24.14)

अर्थात् ईश्वर नाम की यदि कोई सत्ता है तो वह भी उसी को फल देती है या सहयोग करती है जो कर्म करता है। जो कर्म निष्ठ नहीं है उसका सहयोग ईश्वर भी करता नहीं। अतः भाग्य के सहारे अकर्मण्यता को त्याग कर्म की पूजा करनी चाहिए। **तस्मात् सम्पूजयेत कर्म।** सत् कर्म करते हुए गोविन्द का स्मरण करें तो कर्म सहज भाव से उत्तम होगा ऐसी मान्यता है। गीता में गोविन्द आदेश करते हैं।

"तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युद्ध्य च" सर्वेषु कालेषु मां अनुस्मर और युद्ध्य च – प्रत्येक काल में मेरा स्मरण करो और युद्ध यानि कर्म करो तो ही सफलता मिलेगी। हम कर्म करेंगे भगवत् स्मरण नहीं करेंगे तो सफलता सम्भव नहीं और केवल भगवान् की माला ही जपते रहेंगे कर्म नहीं करेंगे तो भी सफलता सम्भव नहीं। अतः काम करते चलो नाम जपते चलो – हर समय कृष्ण का ध्यान धरते चलो काम की वासना को मिटाते चलो, कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो। अतः प्रतिपल प्रतिक्षण यह आभास रहे कि गोविन्द हमारे साथ हैं एवं हम जो भी कर रहे हैं प्रभु देख रहे हैं ऐसा स्मरण करके सत्कर्म में प्रवृत्त रहें। अतः कर्म ही भाग्य है अन्य कुछ नहीं। कर्म ही सर्वस्व है।

गो गो
पा विं
ल द

कृष्ण, गोविन्द, गोपाल गाते चलो,
मनको विषयों के विष से बचाते चलो।
देखना इन्द्रियों के न घोड़े भगें,
इनपै दिन रात संयम के कोड़े लगें।
अपने रथ को सुमारग चलाते चलो।।
प्राण जायें पर हरिनाम भूलो नहीं,
दुःख में तड़पो नहीं सुख में फूलो नहीं।
प्रेम भक्ति के आंसू बहाते चलो।।
नाम जपते रहो काम करते रहो,
पाप की वासनाओं से डरते रहो।
नाम धन का खजाना बढ़ाते चलो।।
याद आएगा उनको कभी न कभी,
दास पायेगा उनको कभी न कभी।
ऐसा विश्वास दिल में जमाके चलो।।

नवनन्दजी

● पं. श्री किशनलाल जी शास्त्री

।। श्रीकृष्णाय वयं नुमः।।

ब्रज बड़े गोप पर्जन्य के सुत नीके नवनन्द।
धरानन्द, ध्रुवनन्द, तृतिय उपनन्द सुनागर।
चतुर्थ तहाँ अभिनन्द, नन्द, सुख सिंधु उजागर।।
सुठि सुनन्द पशुपाल, निर्मल निश्चय अभिनन्दन।
कर्मा धर्मानन्द अनुज वल्लभ जग वन्दन।।
आस पास वा बगर के जहँ विहरत पशुप सुछन्द।
ब्रज बड़े गोप पर्जन्य के सुत नीके नवनन्द।।

अर्थ – ब्रजमण्डल के सबसे माननीय गोप पर्जन्य जी के अति सुन्दर एवं सुशील नौ पुत्र थे, वही नवनन्द हैं। धरानन्दजी, ध्रुवनन्द जी, तीसरे परमचतुर उपनन्दजी और चौथे अभिनन्दजी थे। प्रसिद्ध यशस्वी तथा सुख के सागर नन्दजी थे। पशुओं के पालक आनन्दप्रद निर्मल और निश्चल बुद्धि वाले सुनन्दजी थे। विश्वसनीय कर्मानन्दजी और धर्मानन्दजी तथा उनके छोटे भाई बल्लभजी थे। जहाँ गायों का चरने का स्थान है वहाँ उसी के आस–पास स्वच्छन्दता से ये गोप विचरते रहते थे।

व्याख्या–ब्रज

ब्रजभूमि मोहिनी मैं जानी।
मोहन कुंज मोहन वृन्दावन मोहन यमुना पानी।।
मोहननारि सकल गोकुल की बोलत अमृत बानी।।
जै श्रीभट के प्रभु मोहन नागर मोहन राधारानी।।

यदुवंश में सर्वगुण सम्पन्न एक देवमीढ़ नाम के राजा हुये। वे श्रीमथुराजी में निवास करते थे। उनके दो पत्नियाँ थीं, पहली क्षत्रिय वर्ण की, दूसरी वैश्य वर्ण की। उन दोनों रानियों के क्रम से यथायोग्य दो पुत्र हुये एक का नाम शूरसेन, दूसरे का नाम पर्जन्य। माता–पिता दोनों क्षत्रिय वर्ण होने से श्रीशूरसेन जी क्षत्रिय रहे। परन्तु पर्जन्य जी का जन्म वैश्य वर्ण की माता से हुआ था। अतः 'मातृवद् वर्णसंकर' इस न्याय से वैश्य जाति को प्राप्त कर इन्होंने गोपालन वृत्ति विशेष को अपनाया। ये बड़े ही भगवत्–भागवत सेवी थे। ये अपने औदार्य गुण से परम प्रशंसनीय थे। ये यश में प्रहलाद, प्रतिज्ञा में ध्रुव, महिमा में पृथु, शत्रुओं के प्रति भीष्म, मित्रों के प्रति शंकर, गौरव में ब्रह्मा तथा तेज में श्रीहरि के तुल्य थे। पर्जन्य (मेघ) की तरह प्राणीमात्र के लिए मंगलकारी होकर इन्होंने अपने पर्जन्य नाम को चरितार्थ कर दिया था। इनके समान ही इनकी परम भगवती पत्नी ने भी सर्व शुभ लक्षणों से सम्पन्न होकर अपने 'वरीयसी' इस नाम को सार्थक किया था। ये समस्त गोपों के राजा थे। इनके परम भाग्यशाली उपनन्दादि नव पुत्र थे।

श्रीगोपालचम्पू में वर्णन आता है कि श्रीपर्जन्यजी ने श्रीवसुदेव आदि राजाओं एवं श्रीगर्गाचार्य आदि ब्राह्मणों की सभा करके अपने ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ पुत्र श्री उपनन्द जी को राजतिलक दे दिया। परन्तु श्रीउपनन्दजी ने पूर्व विधि के अनुसार ही अपने मँझले भाई श्रीनन्दजी को ही गोकुल के राजा के रूप में सम्मानित कर दिया। श्रीनन्दजी भी सलाह के बहाने विशेष रूप से श्रीउपनन्द जी की आज्ञा का ही पालन करते हुये प्राणवत् प्रजा का पालन करते थे। सुमुख गोप की कन्या श्रीयशोदा नन्दरानी के रूप में सुशोभित हुई। श्रीनन्द–यशोदा का दिव्य दाम्पत्य परमसुखावह था। व्रजराज श्रीनन्द जी सब प्रकार की समृद्धियों से सम्पन्न थे, परन्तु उनके पुत्र नहीं था। अवस्था भी ढल गयी थी। चौथापन

चुनौती दे रहा था। श्रीउपनन्द आदि वृद्ध गोपों ने परस्पर परामर्श करके एक पुत्रेष्टि यज्ञ का आयोजन किया। सबने यज्ञ पुरुष से गोपराज नन्द के लिए पुत्र प्रदान करने की प्रार्थना की।

उधर बाहर यज्ञ हो रहा था, इधर अन्तःपुर में श्रीनन्दजी यशोदा से कह रहे थे – महरि यद्यपि मन में पुत्र की कामना है और पुत्रेष्टि यज्ञ में मेरा विश्वास भी है, परन्तु मन में जिस प्रकार के पुत्र की अभिलाषा है, और हमारे हृदय में जिसकी स्फूर्ति भी होती रहती है कर्म फलस्वरूप उसे प्राप्त करने की आशा दुराशा मात्र है। श्रीयशोदा जी ने बड़ी उत्कण्ठा के साथ जब उस संकल्पित शिशु के सम्बन्ध में जिज्ञासा की तो श्रीनन्दजी कहने लगे –

श्यामश्चञ्चल चारु दीर्घ
नयनो बालस्तावांकस्थले,
दुग्धोद्गारि पयोधरे स्फुटमसौ
कीडन् मयालोक्यते।।
स्वप्नस्तत् किमुजागरः
किमथवेत्येतत्र निश्चीयते,
सत्यं ब्रूहि सधर्मिणि स्फुरति
किं सोऽयं तवाप्यन्तरे।।

मैं देखता हूँ, दिव्यातिदिव्य नीलमणि सदृश श्यामसुन्दर एक बालक, जिसके चञ्चल मनोहर नेत्र अत्यन्त विशाल हैं, तुम्हारी गोद में स्थित होकर तुम्हारे दुग्धस्रावी पयोधरों का दुग्ध पान कर रहा है और भाँति–भाँति के खेल कर रहा है। उसे देखकर मैं अपने आपको खो देता हूँ। सोता हूँ या जागता हूँ, कुछ भी पता नहीं चलता। यशोदे! सत्य बताओ क्या–कभी तुमने भी इस बालक को स्वप्न में देखा है? आनन्द विह्वल होकर गद्गद् कण्ठ से श्रीयशोदा बोलीं–व्रजराज! सचमुच मैं भी ठीक ऐसे ही बालक को अपनी गोद में खेलता हुआ देखती हूँ। तदनन्तर श्रीनन्द–यशोदा इसे श्रीहरि कृपा समझकर दोनों ने तन, मन वचन से श्रीहरि–चरण–शरणापन्न होकर एक वर्ष के लिए भगवान् के अत्यन्त प्रिय द्वादशी के दिन यथा विधि व्रत करने का नियम लिया और व्रत का आरम्भ किया। व्रतानुष्ठान सर्वांगपूर्ण सम्पन्न हुआ। एक दिन श्रीयशोदा ने स्वप्न की भाँति यह अनुभव किया कि वह पहले स्वप्न में देखा हुआ बालक एक विद्युत वर्णा बालिका के साथ नन्द हृदय से निकलकर हृदय में प्रवेश कर रहा है। बस, तभी से यशोदा के गर्भ–लक्षण प्रकट होने लगे और आठ महीने के बाद भाद्र मास की कृष्णाष्टमी के दिन आनन्दकन्द श्रीगोविन्द का प्राकट्य हुआ। बड़ा भारी उत्सव मनाया गया। यत्र–तत्र सर्वत्र **'नन्द के आनन्द भयौ जै कन्हैयालाल की'** यह मंगल ध्वनि छा गई। श्रीनन्दजी तो वात्सल्य रस के साकार स्वरूप हैं। अपने लाल के प्रति इनका प्रेम दिन–दूना, रात चौगुना सौगुना बढ़ने लगा। ये रात दिन अपने लाल की मंगल कामना के लिये विविध जप–तप, पूजा–पाठ, व्रतोपवासों का अनुष्ठान करते रहते थे। जब गोकुल में कंस के कारण नित्य प्रति अनेक प्रकार के उपद्रव होने लगे तो ये अपने सम्पूर्ण समाज को लेकर बरसाने के समीप आकर बस गये। गाँव का नाम पड़ा नन्दगाँव।

एक बार नन्दबाबा ने कार्तिक शुक्ल एकादशी का उपवास किया था। दिनभर भगवान् की सेवा पूजा में लगे हुए जागरण किया। रात्रि अभी अधिक शेष थी, ये स्नान करने चल पड़े। श्रीयमुनाजी में प्रवेश करते ही जल के देवता वरुण के दूत उन्हें पकड़ कर अपने स्वामी के पास ले गये। श्रीनन्दबाबा को न देखकर गोपों

में बड़ी खलबली मच गई। वे श्रीकृष्ण एवं बलराम का नाम लेकर विलाप करने लगे। सर्वज्ञ श्रीकृष्ण ब्रजवासियों को सान्त्वना देकर श्रीयमुना में कूदकर वरुण लोक पहुँच गये। वरुण देवता ने श्रीकृष्ण की बड़ी पूजा की और उनका दर्शन पाकर अपने जीवन और जन्म को सफल माना तथा दूतों की धृष्टता के लिए क्षमा–याचना की। इसके बाद भगवान् श्रीकृष्ण अपने पिता को लेकर ब्रज में चले आये और ब्रजवासी बन्धुओं को आनन्दित किया। श्रीनन्दबाबा को वरुण का ऐश्वर्य तथा अपने लाल का प्रभाव देखकर बड़ा विस्मय हुआ। ऐसे ही एकबार नन्दबाबा ने गोपों के सहित शिवरात्रि के अवसर पर अम्बिका वन की यात्रा की। वहाँ एक बड़ा भारी अजगर रहता था। उसने सोये हुये नन्दजी को पकड़ लिया। जब वे चिल्लाये तो भक्तवत्सल भगवान् ने वहाँ पहुँचकर अपने चरणों से उस अजगर को छूकर उसका उद्धार किया और अपने पिता की रक्षा की।

जब अक्रूरजी के साथ श्रीकृष्ण और बलराम मथुरा चले गये और पुनः स्वयं नहीं लौटे परन्तु श्रीनन्दबाबा को विवश होकर पुनः ब्रज को लौट आना पड़ा। श्रीकृष्ण की लीलाओं का संस्मरण ही उनके जीवन का एकमात्र सम्बल रह गया था। जिस समय उद्धवजी श्रीश्यामसुन्दर का सन्देश लेकर ब्रज आये और श्रीनन्दबाबा से मिले उस समय जब ये अपने लाल की एक–एक लीलाओं को याद कर करके उद्धव से श्रीकृष्ण की कुशल पूछने लगे तब वे तो इनके लोकोत्तर वात्सल्य स्नेह को देखकर चकित हो गये। प्रेम की कैसी अद्भुत महिमा है कि श्रीकृष्ण के अनेकों अति मनुष्य चरित्रों को अपनी आँखों से देखकर भी श्रीनन्दबाबा तो उन्हें अपना लाल ही मानते हैं। तभी तो जगत्पिता ने भी अपने सर्वेश्वरत्व को भुलाकर इनका पुत्र बनकर विविध विनोद किया।

श्रुतिमपरे स्मृतिमपरे भारतमपरे भजन्तु भवभीताः।
अहमिह नन्दं वन्दे यस्यालिन्दे परं ब्रह्म।।

समस्त व्रजवासीगण –

बाल वृद्ध नरनारि गोप हौं अर्थी उन पादरज।।
नन्दगोप उपनन्द ध्रुव धरानन्द महरि जसोदा।
कीर्तिदा वृषभानु कुँवरि सहचरि मन मोदा।।
मधुमंगल सुबल सुबाहु भोज अर्जुन श्रीदामा।
मण्डल ग्वाल अनेक श्याम–संगी बहुनामा।।
घोष निवासिन की कृपा सुर–नर वांछित आदि अजा।
बाल वृद्ध नर नारि गोप हौं अर्थी उन पाद रज।।

भावार्थ – ब्रह्मा आदि सभी देव तथा ऋषिमुनि जिन–ब्रजमण्डल के निवासियों की कृपा को चाहते हैं उन बालक–वृद्ध, स्त्री–पुरुष सभी गोपी ग्वालों की चरणरज को मैं अपने सिर पर चढ़ाना चाहता हूँ। नन्दगोप, उपनन्द, ध्रुवनन्द, धरानन्द, नन्दजी की पत्नी यशोदा जी, कीर्ति देने वाली वृषभानु की पत्नी कीर्तिजी, बरसाने के राजा वृषभानुजी, वृषभानुकुमारी श्रीराधिका, प्रसन्नचित्त सखियाँ, मधुमंगल, सुबल, सुबाहु, भोज, अर्जुन, श्रीदामा और सम्पूर्ण ग्वाल–बालों जिनके अनेक नाम हैं, जो श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण चन्द्र के साथी हैं, इनके सबके पद की धूरि का चाहने वाला हूँ।

श्रीनन्द–यशोदा श्रीकृष्ण के नित्य पिता–माता हैं तथा लीलाकाल में अन्य भगवद्विभूतियों का भी पिता–माता के रूप में प्रतिष्ठित होना पाया जाता है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में प्रसंग आता है कि वसुओं में श्रेष्ठ तपोधन द्रोण ही श्रीनन्दजी के रूप में तथा उनकी पत्नी परम तपस्विनी धरा श्रीयशोदा के रूप में प्रकट हुई थीं। इन दोनों ने श्रीहरि को पुत्र रूप में पाने का वरदान पाया

था। बात वस्तुतः यह है कि नित्य पिता–माता नन्द यशोदा में ही इनका अंश भी समाया रहता है। वात्सल्य रस की अप्रतिम प्रतिमा श्रीयशोदा के सुख सौभाग्य का कौन वर्णन कर सकता है जिनके पुत्र रूप में स्वयं भगवान् परमानन्द कन्द श्रीकृष्णचन्द्र हैं। श्रीनारदजी कहते हैं–

किं ब्रूमस्त्वां यशोदे कति कति
सुकृत क्षेत्रवृन्दानि पूर्वं,
गत्वा कीदृग्विधानैः कति कति
सुकृत्यान्यार्जितानि त्वयेव।
न शक्रो न स्वयम्भूतं च
मदनरिपुर्यस्य लेभे प्रसादं,
तत्पूर्ण ब्रह्म भूमौ विलुठति
विलपन् क्रोडमारो ढुकामः।।

अर्थ – अरी यशोदे! तुझसे हम क्या कहें, अकेली तूने ही न जाने कितने पुण्य क्षेत्रों में जाकर किन–किन विधियों द्वारा कितने–कितने पुण्य किये हैं। अरी! जिनकी कृपा कटाक्ष को इन्द्र, ब्रह्मा और महादेव कोई भी प्राप्त नहीं कर सके। वह पूर्ण ब्रह्म श्रीकृष्ण तेरी गोद में चढ़ने के लिए रोता हुआ पृथ्वी पर लोट रहा है। तू धन्य है।

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं–

(माता) लैं उछंग गोविन्द मुख बार निरखै।
पुलकित तनु आनंदघन छन छन मन हरषै।।
पूछत तोतरात बात मातहिं यदुराई।
अतिसय सुख जाते तोहिं मोहिं कहु समुझाई।।
देखत तुव वदन कमल मन अनन्द होई।
कहै कौन रसना मौन जानै कोई कोई।।
सुन्दर मुख देखाउ इच्छा अति मोरे।
मम समान पुण्य पुंज बालक नहि तोरे।।
तुलसी प्रभु प्रेम विबस मनुज रूप धारी।
बालकेलि लीला रस ब्रजजन हितकारी।।

श्रीयशोदाजी के वात्सल्य की बलिहारी है। 'जासु त्रास डर कहुं डर होई।' उन्हें ही वह हाऊ का भय दिखाती है। तथा–

खेलन दूर जात कित कान्हा।
आज सुन्यो वन हाऊ आयौ तुम नहिं जानत नान्हा।।
यह लरिका अबहिं भजि आयौ लेहु पूछि किन ताहि।
कान काटि वह लेत सबनि के लरिका जानत जाहिं।।
चलहु वेग सबरे जैयें भजि अपने अपने धाम।
सूरदास यह बात सुनत ही बोलि लिये बलराम।।

अर्थ – बालकृष्ण भी अपनी मैया यशोदा पर कितना प्यार करते हैं, वह वर्णन नहीं किया जा सकता है। कथा आती है जब मैया यशोदा ने लाल को ऊखल में बाँध दिया था। तब श्रीनन्दनन्दन के संस्पर्श से यमलार्जुन का उद्धार हुआ। जब उन दोनों वृक्षों के गिरने का शब्द नन्दबाबा को सुनायी पड़ा, तो वे अथाई पर से दौड़े–दौड़े आये जब उन्हें सब वृत्तान्त मालूम हुआ तो उन्होंने लाल को गोद में उठा लिया, श्रीयशोदा पर बहुत नाराज हुये और अन्त में यह बोले कि देखो महरि! हमें तुमसे कोई प्रयोजन नहीं है। यदि लाल को इस प्रकार प्रताड़ित करोगी तो मैं इसे लेकर कहीं तीर्थ में चला जाऊँगा। यथा – **'यास्यामि तीर्थमद्यैव कण्ठे कृत्वा तु बालकम्।** अथवा **त्वं गृहाद् गच्छ त्वया मे किं प्रयोजनम्।।** यह कह श्रीनन्दबाबा लाल को लेकर पुनः अथाई पर चले गये। इधर मैया को बहुत पश्चात्ताप हुआ। वे अपने को धिक्कारने लगीं। हाय! मेरे हाथ नहीं कट गये। जेवरी नहीं जल गयी। आदि आदि। मैया के दुख का पारावार नहीं था। उधर बालकृष्ण मैया के स्नेह से आकृष्ट हुये। लीलाबिहारी ने लीला ठानी। बोले–बाबा! बड़े जोर की भूख लगी है। बाबा ने तुरन्त एक

गोप से कहा – जा रे, अपने घर से दूध तो ले आ। ग्वाल बोला–बाबा! अभी हाल लाया। यह कहकर जब वह गोप चलने लगा तो श्रीबालकृष्ण बोले–ना बाबा, मैं तो मैया का दूध पीऊँगा। बाबा बोले–क्यों लाला– मैंने तो तेरे ही लिए तेरी मैया को छोड़ा और तू उसी का पक्ष लेता है। लाल बोले–ना बाबा मैं तो मैया का दूध ही पीऊँगा और मैया की गोद में जाऊँगा। तब तक वहाँ यशोदा की भेजी हुई एक ग्वालिन आई। वह अथाई के नीचे से सब बात सुन रही थी। श्यामसुन्दर का रुख जानकर झट से उसने गोद में लेने के लिए हाथ उठाया। लाल लपककर तुरन्त गोद में आ गये। मैया यशोदा ने आगे बढ़कर लाल को अपनी गोद में लेकर मुँह चूमा। यह है मैया और कन्हैया का परस्पर का भाव।

श्रीकृष्ण–बलराम अक्रूर जी के साथ मथुरा जा रहे हैं। मैया यशोदा का हृदय विदीर्ण हो रहा है। वह करुणक्रन्दन करते हुये कहती हैं–

पद

यशोदा बार–बार यों भाखै।
है कोउ व्रज में हितू हमारौ चलत गोपालहिं राखै।।
कहा काज मेरे छगन मगन को नृप मधुपुरी बुलाये।
सुफलक सुत मेरे प्राण हनन को काल रूप ह्वै आये।।
बरु ए गोधन हरौ कंस सब मोहि बन्दि लै मेलौ।
इतनो ही सुख कमल नैन मो अँखियन आगे खेलौ।
वासर वदन विलोकत जीऊँ निसि दिन अंकम लावौ।
तेहि विदु जौं जिऊँ करमबस तौ हँसि काहि बुलावौ।
कमल नैन गुट टेरत हेरत अधर वदन कुम्हिलानी।
सूर कहाँ लगि प्रगट जनाऊँ दुखित नन्द की रानी।।

श्रीकृष्ण–बलराम मथुरा चले गये। संग में श्रीनन्दबाबा भी गये थे। परन्तु राम–कृष्ण तो वहीं रह गये। अकेले नन्दबाबा घर लौट आये। केवल श्यामसुन्दर की सुधियों को सँजोए हुये। मैया ने देखा–लाल नहीं आये। हृदय चीत्कार कर उठा–प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है? दुखजल निधि डूबी का सहारा कहाँ है?

लखिमुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ।
वह हृदय दुलारा नैन तारा कहाँ है?
पलपल जिसके मैं पन्थ को देखती थी।
निशि दिन जिसके ही ध्यान में थी बिताती।
उस पर जिसके हैं सोहती मुक्त माला।
वह नव नलिन से नैन वाला कहाँ है?
सहकर कितने ही कष्ट और संकटों को।
बहुयजन कराके पूजिके निर्जरों को।
वह सुवन मिला है जो मुझे यत्न द्वारा।
प्रियतम वह मेरा कृष्ण प्यारा कहाँ है?

मैया बाबा का स्नेह श्रीकृष्ण मथुरेश, द्वारकेश होने पर भी नहीं भूल सके। यथा–

पद

ऊधो मोहिं ब्रज विसरत नाहिं।
वृन्दावन गोकुलतन अरु रावल सघन कुंज की छाहीं।।
प्रात समय माता यसुमति अरु नंद देखि सुख पावत।
माखन रोटी दह्यौ सजाओ अति हित साथ खवावत।

सूर्यग्रहण के समय कुरुक्षेत्र में श्रीनन्द यशोदा एवं समस्त ब्रजवासियों से श्रीकृष्ण का मिलन हुआ। मैया यशोदा श्रीकृष्ण को द्वारकानाथ समझकर मिलने में हिचक रही थीं। तब श्रीकृष्ण स्वयं ललक कर मैया के पास जाकर बोले –

अबहँसि भेटहु कहिमोहि निजसुत बाल तिहारौ हौं नन्ददोहाई।
रोम पुलकि गद्गद् तनु तिहि छिन जलधारा नैननि बरसाई।।
मिले सुतात मात बन्धू सब कुशल कुशल करि प्रश्न चलाई।
सूरदास प्रभु कृपा करी अब चितहिं धरे पुनिकरी बड़ाई।।

इनकी लीला अपार हैं।

❐

सनातन धर्म भास्कर

● पं. श्रीरामानुज जी शास्त्री

● पूर्व क्रमागत

वेदशास्त्र का ज्ञान विशेष रूप से ब्राह्मण को होना चाहिए, क्योंकि समस्त वर्णों को ज्ञान रूपी चक्षु प्रदान करने वाला ब्राह्मण ही होता है। जो स्वयं चक्षु वाला नहीं है वह दूसरों को मार्ग नहीं दिखा सकता है। यदि अन्धा व्यक्ति किसी को मार्ग दिखाता हुआ चलता है तो वे दोनों गढ्ढे में गिरते हैं **''अन्धेनैवनीयमाना यथान्धा''** इसलिए स्वयं पतन से बचते हुए दूसरे अज्ञानी लोगों को भी उनके उत्थान के लिए जैसे विशिष्ट ज्ञान की शिक्षा दे सके इसी प्रकार से उसको वेद शास्त्र रूपी ज्ञान के नेत्र से युक्त होना चाहिए। वेद तथा धर्म शास्त्र का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। वेद का ज्ञान है परन्तु शास्त्र का ज्ञान नहीं है अथवा शास्त्र का ज्ञान है वेद का ज्ञान नहीं है तो वह ब्राह्मण काना अर्थात् एकाक्षी कहलाता है। वेद शास्त्र दोनों के ज्ञान से शून्य है तो वह अन्धा कहलाता है जैसे–

श्रुतिः स्मृति उभे नेत्रे ब्राह्मणस्य प्रकीर्तिते।
एकेन विकलः काणः द्वाभ्यामन्धः प्रकीर्तितः।।
(मनु स्मृति)

कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है जो शास्त्र में उपलब्ध नहीं है। मनुष्य के जीवन में जितनी आवश्यक शिक्षाएँ हैं धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति की शिक्षाएँ वेद शास्त्र इतिहास पुराणों में भरी पड़ी हैं। मानव चरित्र को पवित्र बनाने के लिए तथा इहलौकिक पारलौकिक परम कल्याण की प्राप्ति के जितने साधन हैं जितनी शिक्षाएँ हैं उतनी शिक्षाएँ अन्य किसी धर्म में नहीं हैं, मनुष्य के बड़प्पन का ज्ञान, महानता, उदारता का ज्ञान उनके आचरण से ही हो जाता है, सनातन धर्मावलम्बी महापुरुषों का आचरण अत्यन्त पवित्र महान उदाहरणपूर्ण सर्वभूत हितैषितापूर्ण, विवेकपूर्ण, अहिंसापूर्ण, शान्तिपूर्ण होता है। यह वैदिक सनातन धर्म का ही प्रभाव है। वैदिक सनातन धर्म जैसे प्रकाशमान विशुद्ध परम पवित्र निष्पक्ष तथा सम्पूर्ण प्राणियों के लिए श्रेयस्कर अन्य कोई धर्म नहीं देखा जाता। सृष्टि के रहस्य को विभिन्नताओं, विषमताओं को सनातन धर्म के धर्मशास्त्रों में दिखाया गया है। यह जीव के कल्याण के लिए है ईर्ष्या द्वेष, वैर विरोध के लिए नहीं। इसी विषय को प्रकृति के परिणाम से ही फिर से बताया जाता है। जिससे पाठक महानुभावों को पूर्णरूप से ज्ञात हो सके कि सनातन धर्म पूर्णतः निर्दोष है।

सत्व, रज, तम प्रकृति के तीन गुण हैं। इन तीनों की साम्यावस्था को ही प्रलय कहते हैं। और इन तीनों गुणों का विभक्त हो जाना इस विषमावस्था को ही सृष्टि कहते हैं। इस रहस्य को समझाने के लिए यहाँ सृष्टि प्रकरण को दिखा देना उचित होगा। अतः पहले सृष्टि प्रकरण का ही निर्देश किया जाता है। श्रीमद्–भागवत महापुराण के बारहवें स्कन्ध के चौथे अध्याय में चार प्रकार के प्रलय का वर्णन है। नित्य, नैमित्तिक प्राकृतिक तथा आत्यन्तिक।

1–नित्य–प्रलय–उसको कहते हैं–जो नदी के जल के प्रवाह के तुल्य नित्य निरन्तर परिवर्तन होता है। जैसे नदी के जल का प्रवाह निरन्तर चलता रहता है। उससे कहीं अधिक तीव्र गति

से काल का प्रवाह चलता रहता है। इस काल के प्रवाह में वर्तमानता नहीं है। क्योंकि वर्तते इति वर्तमान इस व्युत्पत्ति के अनुसार काल की गति रुकती तब तो वर्तमानता सिद्ध होती। अतः काल में भूत और भविष्य का ही अस्तित्व है। वर्तमान का अस्तित्व नहीं है। वर्तमान का प्रयोग केवल लौकिक व्यवहार के लिए ही होता है एक वर्ण या स्वर का उच्चारण भी भविष्य से निकल कर भूत में चला जाता है। इस प्रकार अत्यन्त सूक्ष्म काल की तीव्र गति से प्रत्येक पदार्थ में निरन्तर परिवर्तन होता है वही नित्य प्रलय है।

2–नैमित्तिक प्रलय–ब्रह्माजी के दिन की समाप्ति होने पर उनकी रात्रि में 'भूःभुवः स्वः' इन तीनों लोकों का प्रलय हो जाता है। सृष्टिकर्ता ब्रह्मा इन तीनों लोकों के समस्त जीवों को अपने में विलीन करके स्वयं परमात्मा भगवान् नारायण के उदर में शयन करते हैं। इस तरह ब्रह्माजी की निद्रा के निमित्त से जो प्रलय है इसे नैमित्तिक प्रलय कहते हैं।

3–प्राकृतिक प्रलय–प्राकृतिक प्रलय उसको कहते हैं। जब ब्रह्मा जी के अपने वर्ष से सौ वर्ष पूरे हो जाने पर चतुर्दश भुवनात्मक सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का प्रलय हो जाता है। उसमें सारे प्राणी अन्न में विलीन हो जाते हैं। अन्न पृथ्वी में, पृथ्वी अपने गुण गन्ध के सहित जल में, जल अपने गुणरस के सहित अग्नि में, अग्नि अपने गुण रूप के सहित वायु में, वायु अपने गुण स्पर्श के सहित आकाश में, आकाश अपने गुण शब्द के सहित भूतादि अर्थात् तामस अहंकार में विलीन हो जाता है।

पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ राजस अहंकार में विलीन हो जाती है।

इन्द्रियों के अधिष्ठाता देवता सात्विक अहंकार में विलीन हो जाते हैं। त्रिविध अहंकार महत्तत्त्व में विलीन हो जाता है। महत्तत्त्व त्रिगुण में, त्रिगुण प्रकृति में, प्रकृति पुरुष में तथा पुरुषपरमात्मा श्रीनारायण में विलीन हो जाते हैं। इस प्रकार पूरे प्रकृति वर्ग का जो प्रलय है। वह प्राकृतिक प्रलय कहलाता है। इसी को महा प्रलय भी कहते हैं।

4–आत्यन्तिक प्रलय–आत्यन्तिक प्रलय उसको कहते हैं कि जब कोई पुण्यात्मा जीव आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन त्रिविध तापों से सन्तप्त होकर संसार से अत्यन्त विरक्त हो जाता है तथा मुमुक्षु बन कर, ज्ञान अथवा भगवद् भक्ति का आश्रय लेकर इस दुःखमय संसार से अत्यन्त मुक्त हो जाता है। उसको आत्यन्तिक प्रलय कहते हैं।

इस प्रकार चार प्रकार के प्रलयों का वर्णन किया गया है। तीनों गुणों की साम्यावस्था का नाम ही प्रकृति है। अब प्रकृति में किस प्रकार से विषमता होती है और किस प्रकार से सृष्टि का विस्तार होता है उसको यहाँ पुनः बताया जाता है।

परमात्मा की दृष्टि के सामने जब प्रकृति आती है तथा परमात्मा के संकल्प का विषय बनती है तब प्रकृति के गुणों में क्षोभ होता है और तीनों गुण विभक्त हो जाते हैं। इससे महत्तत्त्व उत्पन्ना होता है जो ज्ञान प्रधान होने से 'महत्तत्त्व' तथा क्रिया प्रधान होने से 'सूत्रात्मा' कहलाता है। इसके बाद 'अहंकार' का प्रादुर्भाव होता है। वह तीन प्रकार का होता है सात्विक, राजस तथा तामस। इसमें 'सात्विक' अहंकार से इन्द्रियों के अधिष्ठाता देवता, 'राजस' अहंकार से दस

इन्द्रियों तथा 'तामस' अहंकार से 'आकाश' तत्व की उत्पत्ति होती है, शब्द जिसका गुण है। आकाश में विकार होता है तब 'वायु' तत्व की उत्पत्ति होती है जिसका गुण 'स्पर्श' है। वायु तत्व से अग्नि तत्व उत्पन्न होता है, जिसका गुण 'रूप' होता है। अग्नि तत्व से 'जल' तत्व की उत्पत्ति होती है जिसका गुण 'रस' होता है। जल तत्व से 'पृथ्वी' तत्व की उत्पत्ति होती है, जिसका गुण 'गन्ध' होता है। उपनिषद् प्रमाण– आकाशाद्वायुः वायोरग्नि अग्नेरापः अद्भ्यः पृथ्वी। कारण का गुण कार्य में आता है। इस नियम से वायु में दो गुण हैं स्पर्श–शब्द, अग्नि में तीन गुण हैं रूप–स्पर्श–शब्द, जल में चार गुण हैं रस–रूप–स्पर्श–शब्द तथा पृथ्वी में पाँच गुण हैं, गन्ध–रस–रूप–स्पर्श एवं शब्द।

इनमें आकाशादि को पंच महाभूत तथा शब्दादि को पंचतन्मात्रा कहते हैं। इन्हीं पंच महाभूतों से चराचर प्राणियों की सृष्टि का विस्तार होता है। इसी को प्रकृति की विषमता कहते हैं।

जिसे सनातन धर्म रूपी भास्कर अपने दिव्य प्रकाश में प्रकाशित करके दिखलाते हैं। इन विषमताओं की रचना नहीं करते। इन समस्त सूक्ष्म स्थूल विषमताओं को प्रकाशित करके दिखलाते हैं। इसीलिए सनातन धर्म भास्कर अर्थात् सूर्य हैं।

सनातन धर्म के प्रत्येक शास्त्र में कर्मानुसार सृष्टि विस्तार को दिखाया गया है।

आत्मा नित्य सत्य, सनातन और चेतन है। वह विचित्र शरीर में बँधकर कर्म करता है तथा कर्मानुरूप ही नाना प्रकार के शरीरों को धारण करता है एवं जन्म मृत्यु रूपी संसार चक्र में भटकता रहता है। मैं तो अनुभव करता हूँ कि कोई यदि केवल अष्टादश पुराणों का ही अध्ययन अथवा स्वाध्याय कर ले तो वह त्रिकालदर्शी बन सकता है। क्योंकि कौन सा कर्म करने से किस योनि में, किस रूप–रंग, स्वभाव तथा कर्म वाला होता है इसका पूर्ण रूप से निरूपण किया गया है किन–किन कर्मों से कौन–कौन से रोग होते हैं इसका विशद वर्णन मिलता है। यहाँ तक कि व्यक्ति की आकृति को देखकर मनोवैज्ञानिक ढंग से यह निश्चित हो जाता है कि पूर्व जन्म में यह कौन था और कौन से कर्म किये थे।

पुराणों में स्पष्ट वर्णन मिलता है कि स्वर्ग से आये हुए तथा स्वर्ग में जाने वाले के क्या–क्या विलक्षण लक्षण होते हैं। इसी प्रकार नरक लोक से आये हुए तथा नरक लोक में जाने वाले व्यक्तियों के कौन–कौन से विलक्षण लक्षण होते हैं। इसको कोई पौराणिक विलक्षण पुरुष ही जानते तथा बताते हैं।

यदि कर्म के अनुसार सृष्टि नहीं होती तो यह संसार इतनी विषमताओं से व्याप्त नहीं होता। चौरासी लाख योनियाँ जो प्रसिद्ध हैं इनमें इतनी विषमतायें नहीं होतीं। करोड़ों–करोड़ों मनुष्यों के इकट्ठे होने पर भी एक आकृतिक–प्रकृति तथा स्वभाव प्रभाव से युक्त दो व्यक्ति उपलब्ध नहीं होते। विभिन्न रूप, गुण, स्वभाव तथा कर्म से युक्त देखे जाते हैं। कोई स्वस्थ, कोई रोगी, कोई धनी, कोई गरीब, कोई शिष्ट, कोई दुष्ट अनेक विषमताओं से सम्पन्न संसार दिखता है।

इन सारी विषमताओं को सनातन धर्म रूपी भगवान् भास्कर प्रकाशित करके दिखाते हैं। रचना नहीं करते। यदि रचना करते भी हैं तो जीवों के क्रमानुसार करते हैं स्वतन्त्र नहीं। परस्पर में एक

दूसरे से विद्वेष घृणा तथा तिरस्कार करने के लिए नहीं, इहलौकिक–पारलौकिक कल्याण की प्राप्ति के लिए, इसलिए सनातन धर्म भगवान् भास्कर हैं। अमावस्या की रात्रि के घोर अन्धकार में किसी भी प्रकार की विषमता नहीं दिखती यद्यपि सारी विषमताएँ उस समय भी रहती हैं परन्तु घोर अन्धकार के कारण दिखती नहीं। जब प्रचण्ड मार्तण्ड नामधारी भगवान् भास्कर का उदय होता है तो एक–एक विषमताएँ स्पष्ट दिखने लगती हैं। कहीं मनुष्य तो कहीं पशु–पक्षी, कहीं सूक्ष्म मक्खी, मच्छर, चेंटा–चीटीं दिखती हैं तो कहीं पहाड़ तो कहीं खाई, कहीं बड़े–बड़े वृक्षों से सम्पन्न बीहड़ वन तो कहीं लता पता तृण दिखते हैं। कहीं हरे–भरे पेड़ पौधों से युक्त हरियाली तो कहीं ऊसर भूमि में क्षार दिखते हैं इत्यादि विभिन्न विषमताओं को देखकर यदि कोई कहता है कि सूर्य के द्वारा ये विषमताएँ रची गई हैं तो उससे बढ़कर मूढ़तम कोई दूसरा नहीं होगा।

इसी प्रकार सनातन धर्म रूपी भगवान् भास्कर जीवों के अपने–अपने कर्म तथा स्वभावों के अनुसार इन विषमताओं को दिखाते हैं न कि रचना करते हैं। इसी प्रकार से यदि कोई कहता है कि सनातन धर्म में ये विषमताएँ रची गई हैं तो वह महामूर्ख है। करोड़ों–करोड़ों जो विषमताएँ दिखती हैं ये सूर्य में नहीं हैं, सूर्य की प्रखर किरणों द्वारा प्रकाशित करके दिखाई गई हैं।

इसी प्रकार संसार की सारी विषमताएँ सनातन धर्म में नहीं हैं। सनातन धर्म की दिव्य–दृष्टि के द्वारा प्रकाशित करके दिखलाई गई हैं।

..... महारास .....

रचयिता : डॉ. भागवत कृष्ण

पग नूपुर धरि राधिका
कर मुरली धर स्याम
चितवत चन्द्र चकोर कूँ
कब पावै विसराम
देख छबी ये युगल की
सजल नयन अभिराम
कब राजत सुख सेज पै
होवैं पूरण काम
तृषित सखीजन चकित ह्वै
सब मति हौं निष्काम
दोऊ राधा दोऊ 'कृष्ण' हैं
अद्भुत छबी ललाम

• हिन्दू सेन्टर, न्यूयार्क •

हिन्दू सेन्टर के प्रवासी भारतीय भक्तों को श्रीठाकुर जी के आगमन की प्रतीक्षा रहती है। एवं इतने आनन्द और उत्साह से कथा का आयोजन होता है कि लगता है हम भारत भूमि में ही कथानन्द प्राप्त कर रहे हैं। वहाँ के प्रेसीडेन्ट एवं समस्त ट्रस्टी एवं भक्त जनों का भाव देखते ही बनता है। श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान न्यूयार्क के व्यवस्था प्रमुख कम्प्यूटर इन्जिनियर श्री अवतार शर्मा एवं उनकी धर्मपत्नी एवं परिवार की भक्ति उत्साह और कार्य की निपुणता स्वतः ही भाव विभोर करती है। 12 से 18 जुलाई 2009 तक शाम 6 बजे से 9 बजे तक सप्तदिवसीय कथा महोत्सव में लोगों ने धर्म सम्बन्धी अनेक आध्यात्मिक संकल्प लिए।

• डेनवर U.S.A. •

तदुपरान्त श्री ठाकुर जी महाराज न्यूयार्क से करीब 5000 किलोमीटर दूर कोलोराडो की राजधानी डेनवर (यू.एस.ए.) पधारे जहाँ पूज्य श्री द्वारा संस्थापित भागवत मित्र मण्डल डेनवर यू. एस.ए. द्वारा स्थानीय इस्कॉन मन्दिर के विशाल ऑडिटोरियम में श्रीमद्भागवत कथा महोत्सव का 19 जुलाई से 25 जुलाई 2009 तक भागवत मित्र मण्डल के व्यवस्था प्रमुख श्री सुशील शर्मा (साफ्टवेयर इंजिनियर) श्री सुधांशु भार्गव आदि करीब 30 परिवारों ने पूरे सप्ताह की छुट्टी लेकर कथा उत्सव कार्य में भाग लेकर पूर्ण सहयोग किया एवं हजारों भक्तों ने कथा उत्सव का आनन्द लिया।

• वर्जीनिया •

25 जुलाई को कथा रात्रि 9 बजे पूर्ण हुई तदुपरान्त पूज्य श्री ठाकुरजी रात्रि 12 बजे यूनाइटेड एयरवेज द्वारा चलकर प्रातः 6 बजे वाशिंगटन डी.सी. की बगल में वर्जीनिया स्टेट के दुर्गा टेम्पल पधारे। करीब 5 एकड़ क्षेत्र में बने दुर्गा टेम्पल ऑडिटोरियम में 26 जुलाई से 4 अगस्त 2009 तक चले भागवत सप्ताह कथा महोत्सव में श्री सन्त गुप्ता (प्रेसिडेन्ट) एवं राजकपूर डॉ. कृष्ण गुलाटी, श्रीमती करुणा गुलाटी, शिवानी अग्रवाल आदि का पूर्ण सहयोग रहा। इस कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि कथा उपरान्त 5 और 6 अगस्त को 2 दिन का प्रश्नोत्तर कार्यक्रम रहा जिसमें प्रवासी भारतीयों के अमेरिका में जन्मे बच्चों और किशोर युवाओं ने पूज्य ठाकुरजी से अनेक प्रश्न किये जिनके सारगर्भित उत्तर सुनकर सभी आनन्दित हुए। इस कार्यक्रम में कई राजनीतिज्ञों ने भी भाग लिया।

• न्यूयार्क •

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

दिनांक 7 अगस्त 2009 से 15 अगस्त 2009 तक न्यूयार्क क्षेत्र के जेक्सन हाइट एरिया में वुडवाइड कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव पर विशाल श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन हुआ जिसमें प्रवासी भारतीय सिन्धी समुदाय के श्री मुरली गोपवानी, जगदीश काकवानी, लालचन्दानी एवं गुजराती समाज एवं नेपाली समाज के भक्तों ने भाग लिया। जन्माष्टमी को सायं 7 बजे से रात्रि 1 बजे तक श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया गया।

इस कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि पूज्य श्रीकृष्णचन्द्रशास्त्री (ठाकुरजी) की पवित्र सन्निधि में भारतीय स्वतंत्रता दिवस महोत्सव में बच्चों ने अपनी अभिनव प्रस्तुति से सबका मन मोह लिया। कई राष्ट्रभक्ति गीतों पर पूज्य श्री ठाकुरजी अपने खुशी के आंसू नहीं रोक पाए। आनन्दवर्धक कार्यक्रम हुआ।

• टोरन्टो–कनाडा •

श्रीठाकुरजी अमेरिका के कार्यक्रम पूर्ण कर 16 अगस्त को प्रातः 7 बजे कनाडा के शहर टोरन्टो पधारे 16 अगस्त से 23 अगस्त 2009 तक टोरन्टो के ओकविल क्षेत्र के वैष्णोदेवी टेम्पल में श्रीमद्भागवत एवं श्रीमद्भगवद्गीता के प्रवचन किए। यह कार्यक्रम भागवत–गीता– उपनिषद सत्संग समारोह के रूप में मनाया गया। जिसे आदरणीय श्री ठाकुरजी के परम प्रिय शिष्य श्री विवेक जादौन ने आयोजित किया जो कि कनाडा की प्रतिष्ठित मैक यूनिवर्सिटी के कम्प्यूटर विभागाध्यक्ष हैं तथा करीब 15 वर्षों से इस प्रतिष्ठित पद पर रहकर भारत का नाम रौशन कर रहे हैं। यहाँ सैकड़ों भारतीय मित्रों के निवास पर श्री ठाकुरजी की पधरावनी भी हुई। सभी ने कथा का भरपूर आनन्द लिया।

• वाशिंगटन डीसी •

दिनांक 24 अगस्त को ठाकुर जी पुनः अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन डी.सी. पधारे जहाँ के ''मेरीलेण्ड'' क्षेत्र के विशालतम हिन्दू टेम्पल के विशाल हाल में श्रीमद्भागवत कथा एवं रामकथा का आयोजन वहाँ प्रतिष्ठित सी.ए. श्री राम अग्रवाल, श्री प्रेमकुमार चड्ढा, श्री वेद भगत, डॉ. सुशील गोयल आदि के विशेष भक्तिपूर्ण आग्रह पर हुआ, इसमें भागवत एवं रामकथा महोत्सव का आनन्द भक्तों ने लिया। सायं 6 बजे से 9 बजे तक चलने वाले भागवत कथा कार्यक्रम में ब्रज एवं अवध भक्ति का समन्वय देखने को मिला। भक्तों के साथ पूज्य श्री ठाकुरजी अपने सहयोगी संगीताचार्यों के साथ संसद भवन एवं राष्ट्रपति आवास एवं साइन्स सेन्टर देखने भी पधारे। वाशिंगटन डी.सी. की कथा पूर्ण कर पूज्य ठाकुर जी 1 सितम्बर को पुनः न्यूयार्क पधारे। 2 सितम्बर को सैंकड़ों भक्तों ने जे.एफ. के. एयरपोर्ट न्यूयार्क पर श्री ठाकुरजी से आगामी वर्ष पुनः पधारने की प्रार्थना कर सजल नेत्रों से भावपूर्ण होकर भारत के लिये विदा किया एवं अपने भारतीय ''एयर इण्डिया'' नॉन स्टाप विमान द्वारा अपने संगीताचार्य सहयोगियों सहित श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री (ठाकुर जी) नई दिल्ली भारत पधारे। श्री ठाकुरजी की यह ग्यारहवीं बार अमेरिका–कनाडा यात्रा थी।

देश-विदेश में
श्रीमद्भागवत कथा और प्रवचनों
के माध्यम से श्रीठाकुर जी
अमृत रस की वर्षा कर रहे हैं।
आइये - इस धर्म-ध्वजा को
फहराने में अपने हाथ बढ़ाइये।
श्रीमद्भागवत संदेश पत्रिका
को घर-घर में पहुँचाकर
दिव्य प्रेम रस का
आस्वादन करें और करायें

स्वनामधन्य-कर्मयोगी-धर्मपरायण-परम-भक्त श्रीओमप्रकाश बागला जी

शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।

पूर्वजों के संस्कार, सन्तों की सन्निधि एवं सत्संग के प्रभाव के फलस्वरूप किसी व्यवसाई परिवार में भी साधुहृदय व्यक्ति का जन्म होता है। धर्म के प्रति पूर्ण आस्था, सन्तों के प्रति श्रद्धा, सत्संग में रुचि एवं कर्म के प्रति समर्पण – ऐसे ही एक व्यक्तित्व का नाम है श्री ओमप्रकाश जी बागला। 62 वर्ष की उम्र में भी कार्य करने की उनकी पद्धति किसी युवा से कम नहीं। व्यावसायिक दृष्टि से श्री बागला जी एक प्रतिष्ठित सी.ए. हैं जिनके निर्देशन में अनेक सी.ए. कार्यरत हैं। करीब 20 वर्ष पहले श्री बागला जी ने अपने कालका जी एक्स्टेंशन बंगले पर हमारे द्वारा श्रीभागवत जी की कथा का आयोजन कराया परिवार सहित कथा महोत्सव का आनन्द लिया।

श्री ओमप्रकाश बागला जी द्वारा श्री रामकृष्ण सेवा संस्थान की स्थापना की गई जिसमें भारत के गणमान्य व्यवसाई ट्रस्टी एवं व्यवस्था प्रमुख हैं। मुझे कहते हुए आनन्द मिलता है कि श्री ओमप्रकाश बागला जी के प्रधान यजमानत्व में श्री रामकृष्ण सेवा संस्थान के माध्यम से हमारे द्वारा सन् 1991 में महावीर वाटिका के विशाल प्रांगण में श्रीमद्भागवत कथा महोत्सव आयोजित हुआ। दिल्ली के भक्तों ने मुझे बताया कि व्यवस्था की दृष्टि से दिल्ली का यह अभूतपूर्व आयोजन था। श्री बागला जी रामकृष्ण सेवा संस्थान एवं 'राजस्थान रत्नाकर' संस्था के माध्यम से समाज को जोड़ने एवं विकृति को दूर करने और धार्मिक आस्था जगाने का सतत कार्य करते हैं। आप मातृ भक्त तो हैं ही, मातुश्री की धार्मिक भावनाओं का पूरा ख्याल रखते हैं। आपकी धर्मपत्नी एवं पुत्र और पुत्रवधुओं का भी पूर्ण सहयोग रहता है। धार्मिक चेतना को उन्नत करने में एक कड़ी और जुड़ गई जब श्री ओमप्रकाश बागला जी ने सन् 1996 में श्रीरामकृष्ण सेवा संस्थान के बैनर तले हमारे द्वारा दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किला मैदान में श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण का नव दिवसीय कथा महोत्सव कराया। हजारों प्रेमियों ने कथानन्द प्राप्त किया।

कभी रक्तदान शिविर, तो कभी भारत के प्रसिद्ध डाक्टरों द्वारा फ्री चैक-अप तो कभी निःशुल्क वस्त्र वितरण के कार्य या कभी गरीब कन्याओं के विवाह आदि के पुनीत आयोजन अपने संस्थान के बैनर तले कराना श्री बागला जी के समर्पण भाव समाज सेवा के प्रतीक बन गए हैं। अभी अभी श्री गिर्राज सेवा को समर्पित 1008 भागवत पारायणकथा के आयोजन श्री गोवर्धन एवं वृन्दावन में हुए उसमें भी मुख्य यजमान श्री ओमप्रकाश बागला जी रहे एवं अपने रामकृष्ण सेवा संस्थान के सैकड़ों भक्तों को जोड़कर इन दोनों कार्यक्रमों को अभूतपूर्व बनाया। उन कथाओं का संस्कार चैनल के लाइव टेलीकास्ट द्वारा देश विदेश के करोड़ों लोगों ने लाभ प्राप्त किया। उन कार्यक्रमों में श्री बागला जी के सहयोग की सराहना हजारों सन्तों एवं भक्तों ने की। हमारे अन्तर्राष्ट्रीय श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान द्वारा संचालित कोई भी प्रकल्प चाहे सत्संग का या गौ सेवा का हो या समाज सेवा, सन्त सेवा का हो अथवा भगवत् सेवा का हो, श्री ओमप्रकाश बागला जी का मनसा, वाचा, कर्मणा पूरा सहयोग बना रहता है। ऐसे गौ, ब्राह्मण, सन्त सेवी श्री ओमप्रकाश बागला जी उनके परिवारीजन और उनके रामकृष्ण सेवा संस्थान के समस्त भक्तों के प्रति हमारी अनेकानेक शुभ कामना और आशीष। प्रभु श्री बागला जी को दीर्घायु प्रदान करें एवं उनके द्वारा ऐसे शुभ आयोजन कराते रहें एवं समाज को उन्नत बनाने में सहयोगी बनायें।

आशीर्वाद एवं शुभ कामनाओं सहित

– कृष्णचन्द्र शास्त्री (ठाकुर जी)

नित्य कर्म के कुछ आवश्यक मन्त्र

कराग्रे वसते लक्ष्मी, करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा, प्रभाते करदर्शनम्।।
प्रातःकाल यह मन्त्र पढ़कर अपने हाथों के दर्शन करना अति शुभ है।

• • •

समुद्र वसने देवी, पर्वत स्तन मण्डले।
विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।
इस मन्त्र को पढ़कर सवेरे धरती माता को प्रणाम करना हितकारी है।

• • •

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तुते।।
इस मन्त्र से भगवान् सूर्य का नमन करने से घर में धन की वृद्धि होती है।

• • •

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं, ब्रह्म कर्म समाधिना।।
भोजन से पहले इस मन्त्र का पाठ हमारी बुद्धि और तेज को बढ़ाता है।

• • •

दीप ज्योतिः पर ब्रह्म, दीप ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे पापं, दीप ज्योतिर्नमोऽस्तुते।।
दीप जलाकर इस मन्त्र का पाठ हमारे पापों का नाश करता है।

• • •

अच्युतानन्तगोविन्द नामोच्चारण भेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।
इस मन्त्र के जाप से रोगों का नाश हो जाता है।

• • •

सर्व बाधा प्रशमनं, त्रैलोक्यस्याऽखिलेश्वरी।
एवमेव त्वया कार्यामस्मद्वैरि विनाशनम्।।
हर प्रकार की बाधा नाश करने में यह मन्त्र बहुत प्रभावी है।

• • •

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणंगतः।।
सन्तान के इच्छुक दम्पत्ति इस मन्त्र का जप करें तो सन्तान की प्राप्ति होगी।

• • •

सरस्वति महाभागे, वरदे कामरूपिणी।
विश्वरूपि विशालाक्षी, देहि विद्या परमेश्वरी।।
विद्या प्राप्ति के लिए इस मन्त्र का जाप लाभकारी है।

• • •

या देवी सर्व भूतेषु शान्ति रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।
इस मन्त्र के जाप से घर में सदैव शान्ति रहती है। कलह समाप्त होता है।

• • •

आपदामपहर्तारं, दातारं सर्व सम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं, भूयो भूयो नमाम्यहम्।।
इस मन्त्र के पाठ से भगवान् श्रीराम आपत्तियों का नाश करते हैं और धन सम्पदा देते हैं।

• • •

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः।।
रात्रि में सोने से पहले इस मन्त्र को पढ़ने से भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा से सारे क्लेशों (दुःखों) का नाश होता है।

• • •

धन्या ब्रज वसुन्धरा

● श्री सौरभ गौड़, अध्यक्ष-विश्व हिन्दू परिषद, वृन्दावन

सिंहपौर श्रीहनुमान मन्दिर

श्रीगोविन्ददेव के मन्दिर के निकटवर्ती श्रीसाक्षीगोपाल मन्दिर स्थल के सामने सिंहपौर श्रीहनुमान जी का भव्य मन्दिर है। कुछ वर्ष पहले ही इस मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया गया है। अनेक नर–नारी अपने मनोवांछित को इस श्रीहनुमान जी की पूजा से श्रीहनुमान–चालीसा का नियम पूर्वक पाठ सुनाने से प्राप्त करते हैं। विग्रह सिद्ध है।

हिन्दुओं का नैसर्गिक शत्रु जब औरंगजेब राज्य कर रहा था, उसने हिन्दुओं के अनेक देवमन्दिर तुड़वाकर मस्जिदें बनवा दीं। अयोध्या में श्रीरामजन्म भूमि मन्दिर, वाराणसी में श्रीविश्वनाथ मन्दिर तथा मथुरा में श्रीकृष्णजन्मभूमि मन्दिर उसके जुल्म के शिकार हुए–उनमें मस्जिदें बनायी गयीं। इसी प्रकार वृन्दावन में श्रीगोविन्ददेव जी का मन्दिर भी उसने तुड़वा डाला। काला पहाड़ नामक यवन के साथ सैनिकों को भेज कर यहाँ सिंहद्वार पर भी मस्जिद खड़ी करने की योजना बनायी जा रही थी। उस समय यहाँ श्रीहनुमान जी का साधारण छोटा सा मन्दिर था। एकदिन अचानक हजारों बन्दर आकर यहाँ इकट्ठे हो गये। उन्होंने समस्त यवनों को खदेड़ दिया। किसी की आँखें निकाल डाली। किसी के कान–नाक काट लिए। काट–काट कर उन सबको यहाँ से भगा दिया। यह सब इन्हीं श्रीहनुमान जी के प्रभाव से हुआ। तभी से इनका नाम "सिंहपौर श्रीहनुमान" प्रसिद्ध हुआ। समय पाकर अब उस मन्दिर को भक्तों ने भव्य रूप देकर दर्शनीय बना दिया है।

श्रीषड्भुज महाप्रभु मन्दिर

यह मन्दिर प्रसिद्ध श्रीराधारमण जी मन्दिर और श्रीगोकुलानन्द मन्दिर के रास्ते में बायीं ओर है। गोस्वामी श्रीअद्वैत चरण जी के स्थान (घर) पर श्रीषड़भुजमहाप्रभु का अति प्राचीन विग्रह प्रतिष्ठित है। इनकी दो भुजाओं में वंशी है, दो में धनुष बाण तथा दो में दण्ड कमण्डलु है। अति दर्शनीय श्रीविग्रह है।

कलियुग–पावनावतार श्रीकृष्ण– चैतन्यदेव ने अनेक महत् पुरुषों के सामने अपने अनेक रूप दरसाये हैं षड्भुज रूप को भी प्रकटित किया। विशेषतः श्रीसार्वभौम भट्टाचार्य को श्रीमहाप्रभु ने अपने षड्भुजरूप के दर्शन कराये थे।

मन्दिर रासविहारी श्रीगोपीनाथ जी (वंशीवट)

यह मन्दिर श्रीगोपीश्वर महादेव जी के मन्दिर के कुछ आगे चलकर यमुना तट पर अवस्थित है। यह स्थान–"मणिकर्णिका वंशीवट" नाम से प्रसिद्ध है। यह वह अति पावन स्थान है, जहाँ श्रीरासरसारम्भी भगवान् श्रीकृष्ण ने शरद–पूर्णिमा की उज्ज्वल ज्योत्स्नामयी रात्रि में एक विशाल वट वृक्ष के नीचे चबूतरे पर ललित–त्रिभंग होकर मधुर वंशी–ध्वनि की थी। उस मधुर–ध्वनि को सुनते ही नित्य– कृष्णकान्ता महाभाव–स्वरूपिणी रासेश्वरी श्रीराधाजी असंख्य व्रजरमणियों के साथ भाव विभोर होकर भागी आयीं थीं। स्वयं भगवान् श्रीव्रजेन्द्रनन्दन की प्रकट–लीला का मुख्य प्रयोजन–मधुररस निर्यास का पूर्णतम आस्वादन यहाँ पूरा हुआ। समय पाकर वह स्थान यमुना जी में प्लावित हो गया एवं जो विशाल दिव्य वट वृक्ष था वह भी अन्तर्धान हो गया।

श्रीगदाधर पण्डित जी के शिष्य श्रीमधु पण्डित जी ने फिर इस स्थान पर एक वट वृक्ष की शाखा लाकर रोपण की, जो समय पाकर एक विशाल

वट वृक्ष रूप में प्रकटित हुआ। वही आज तक वर्तमान है। इसी स्थान पर ही श्रीमधु पण्डित जी को श्रीगोपीनाथ जी का साक्षात् दर्शन हुआ था फिर अति मनोहर श्रीविग्रह प्राप्त हुआ, जिसे उन्होंने पृथक् मन्दिर में प्रतिष्ठित किया। वंशीवट स्थान पर श्रीवंशीवट विहारी ठाकुर को विराजमान किया।

मन्दिर श्रीजगन्नाथ जी

श्रीवृन्दावन के तीनों ओर श्रीयमुना कंगनाकार बहती है। श्रीवृन्दावन की परिक्रमा करने के मार्ग में पूर्व दक्षिण कोण में प्रसिद्ध स्थान श्रीसुदामा कुटी से कुछ आगे चलने पर यमुना के किनारे पर एक विशाल पक्का घाट बना हुआ है, जिसका नाम है "जगन्नाथ घाट"। इसी स्थान पर श्रीजगन्नाथ जी का प्राचीन मन्दिर है। इसमें श्रीजगन्नाथ जी, श्रीबलराम जी तथा श्रीसुभद्रा जी के लगभग 200 वर्ष प्राचीन श्रीविग्रह विराजमान हैं, जो नीलाचल–श्रीजगन्नाथपुरी के अति प्रसिद्ध मन्दिर से ही यहाँ पधारे थे। पधारे थे अपनी आग्रहपूर्वक इच्छा से, किन्तु अपने व्रज के एक अनन्य भक्त के साथ।

साधारण मनुष्य तो व्रजनिष्ठ–भक्तों की कृपा प्राप्त किये बिना व्रज में वास प्राप्त नहीं कर सकते, अपने यत्न से वृन्दावन में प्रवेश करने पर भी वे स्थायी व्रजवास प्राप्त नहीं कर पाते–ऐसा सिद्ध अनुभवी भजनशील महानुभाव कहते हैं। लगता है द्वारकावासी श्रीकृष्ण भी स्वयं अपनी इच्छा से श्रीवृन्दावन नहीं आ पाते। अतः उन्हें भी श्रीवृन्दावन में बसने के लिए एक व्रजनिष्ठ सन्त का सहारा लेना पड़ा।

मन्दिर श्रीराधागोपाल (टिकारी मन्दिर)

श्रीजगन्नाथ मन्दिर के पास यमुना किनारे एक विशाल मन्दिर है जिसमें श्रीश्रीराधाकृष्ण, श्रीराधागोपाल तथा श्रीलड्डूगोपाल जी–तीनों श्रीविग्रह विराजमान हैं। इस विशाल मन्दिर का शिलान्यास श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोपीश्वरशरण देवाचार्य ने किया था। गया जिलान्तर्गत टिकारी रियासत के राजा श्रीहितकाम ठाकुर की रानी इन्द्रजीतकुमारी ने सन् 1871 में तेरह लाख रुपये की लागत से इस विशाल देवालय को बनवाया था। स्थापत्य कला का अनुपम प्रदर्शन उपस्थित करता है यह मन्दिर। समीप यमुना पर इससे लगता हुआ एक विशाल पक्का घाट है, जिसे सन् 1884 में महारानी विद्यावति कुंवरि ने बनवा कर इस मन्दिर की शोभा को चार चाँद लगा रखे हैं। श्रीवृन्दावन की परिक्रमा करते हुए अनेक यात्री एवं दर्शक जब यहाँ विश्राम करते हैं तो एक मेला सा जुड़ जाता है।

ज्ञान–गुदड़ी

यह वृन्दावन का प्राचीन एव सिद्धस्थल है। भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा भेजे हुए श्रीउद्धवजी ने श्रीराधाजी प्रधान व्रजसुन्दरियों को इस स्थल पर श्रीकृष्ण–सन्देश सुनाया था। आये तो थे अपना ज्ञानोपदेश सुनाने। किन्तु व्रजरमणियों के विशुद्ध प्रेम का किंचित् विकाश देखकर प्रेम में सराबोर होकर उनकी चरणरज की प्रार्थना करने लगे थे श्रीभागवत–वर्णित भ्रमर–गीत श्रीराधाजी ने इसी पावन स्थल पर दिव्योन्मादमय लहरियों में गान किया था। उस समय इस स्थल के चारों ओर लताकुंज सुशोभित थे, मनोरम वन था।

वर्तमान ज्ञानगुदड़ी में निर्मित चारों ओर ऊँचे–ऊँचे श्रीठाकुर मन्दिरों की शोभा अति मनोहर हो उठती है।

व्रजवासियों की प्रयाग–यात्रा का पर्यवसान ज्ञानगुदड़ी की यात्रा में श्रीश्यामसुन्दर ने स्थापित कर दिया था। अतः आज भी प्रतिवर्ष रथयात्रा महोत्सव के व्यपदेश से श्रीचैतन्य सम्प्रदाय के तथा अन्यान्य देवस्थानों में प्रतिष्ठित श्रीठाकुर विग्रह श्रीजगन्नाथ स्वरूप से सुसज्जित सुन्दर रथों में विराजमान होकर ज्ञानगुदड़ी में पधारते हैं। प्रति

रथ के आगे भक्तजन वैष्णव समाज आनन्दोत्सव मनाता हुआ नृत्य–गान संकीर्तन करता हुआ ज्ञानगुदड़ी जाता है और श्रीठाकुर विग्रहों की परिक्रमा करता है एक अच्छा–खासा मेला जुड़ जाता है।

श्रीतुलसीराम–दर्शन मन्दिर

ज्ञानगुदड़ी में ही श्रीरामगुलेला नामक स्थान है। जहाँ गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी वृन्दावन आने पर ठहरे थे। यहाँ ठाकुर श्रीमदनमोहन जी का मन्दिर है। काल प्रभाव से यह स्थल एवं मन्दिर जीर्ण हो गया था। वृन्दावन के प्रसिद्ध विद्वद् वरेण्य पं0 श्रीबलराम मिश्र जी को प्रभु प्रेरणा हुई। उन्होंने इस स्थल का जीर्णोद्धार किया एवं श्रीमदनमोहन ठाकुर जी की सेवा–भोगराग की सुन्दर–व्यवस्था की। लगभग गत 30 वर्ष से यह प्राचीन स्थान अब 'श्रीतुलसीराम–दर्शन मन्दिर' नाम से प्रसिद्ध है। श्रीमदनमोहन जी के दर्शन के साथ विद्युत–चालित यन्त्र से, भगवान् श्रीकृष्ण ने जैसे श्रीरामरूप में गोस्वामी जी को दर्शन दिये, वही छवि साक्षात् रूप से देखने को मिलती है।

मन्दिर श्रीगोदा विहार

काँच मन्दिर–ज्ञानगुदड़ी से निकलने पर श्रीलालाबाबू मन्दिर की बगल में पक्की सड़क के सिरे पर दायीं ओर बहुत बड़े भूखण्ड पर अति विस्तार से निर्मित यह मन्दिर सुशोभित है। मन्दिर क्या है, एक अजायब घर की भाँति अनुपम सैरगाह भी है। मन्दिर के भीतर सामने श्रीगोदा जी–श्रीरंगनाथ जी के अति विशाल रमणीय श्रीविग्रह प्रतिष्ठित हैं। उसके तीनों ओर बाहरी द्वार तक बरामदों में समस्त भगवदवतारों के, समस्त ऋषि, मुनि, देवी–देवताओं के रंगीन श्रीविग्रह, विभिन्न चित्र दर्शकों का मन आकर्षित कर रहे हैं। मुख्य द्वार से घुसते ही श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु की संकीर्तन मण्डली का जीवन्त दृश्य है। दायीं ओर भूगोल (विशाल ग्लोब) एक प्याऊ के रूप में बना हुआ है, जिस पर मन्दिर निर्माण समय तक के भारत के हर जाति के नेताओं के रंगीन चित्र अंकित हैं। समस्त मूर्तियाँ श्रेष्ठ कलाकृति एवं अपने जीवन–वृत्त को कहती मालूम देती हैं। मन्दिर का दर्शन करते ही बनता है। इस परमाकर्षक मन्दिर के निर्माण का श्रेय स्व0 श्रीबलदेवाचार्य जी को है। लगभग 25 वर्ष इसे बने हो चुके हैं। मन्दिर के पीछे एक विशाल सत्संग भवन तथा यात्री–निवास (गैस्ट हाउस) भी संलग्न है। मन्दिर का नाम है श्रीगोदा–विहार।

श्रीटटिया स्थान

यह मन्दिर 'टटियास्थान' के नाम से प्रसिद्ध है। श्रीरंगजी मन्दिर के दाहिने हाथ यमुना जी की जाने वाली पक्की सड़क के आखिर में ही यह रमणीय स्थान है। विशाल भूखण्ड पर फैला हुआ है किन्तु कोई दीवार, पत्थरों की घेराबन्दी नहीं है, केवल बाँस की खपच्चियों या टटियाओं से घिरा हुआ है। अतः 'टटियास्थान' नाम से प्रसिद्ध है। स्वामी श्रीहरिदास जी की शिष्य– परम्परा के सातवें आचार्य श्रीललितकिशोरी जी ने इस भूमि को अपनी भजन स्थली बनाया था। उनके शिष्य महन्त श्रीललितमोहनदास जी ने सं0 1823 में इस स्थान पर ठाकुर श्रीमोहिनी– बिहारी जी को प्रतिष्ठित किया और तभी ही चारों ओर बाँसों की टटियाएँ लगायी गयी थीं तभी से यहाँ के सेवा–पूजाधिकारी विरक्त साधु ही चले आ रहे हैं। उनकी एक विशेष भूषा भी है। ऐसा सुना जाता है कि श्रीललित–मोहिनीदास जी के समय इसस्थान का यह नियम था कि जो भी आटा–दाल–घी–दूध भेंट में आवे, उसे उसी दिन ही ठाकुर भोग एवं साधु–सेवा में लगाया जाता था। सन्ध्या समय के बाद सबके सब बर्तन खाली करके धो–माँज के उलटे करके रख दिये जाते। कभी भी यहाँ अन्न सामग्री की कमी न रहती थी।

श्रेष्ठ भवन की विधा

● पं. श्री बिष्णु पाठक, ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्रज्ञ

भवनों के संबन्ध में वास्तुशास्त्र के विशिष्ट तथा विविध नियम

1. दक्षिण की तुलना में उत्तर की ओर अधिक खुली हुई जगह छोड़ी जानी चाहिए। इसी प्रकार पश्चिम की तुलना से पूर्व में अधिक खुली जगह छोड़नी चाहिए।
2. भवन की ऊँचाई दक्षिण और पश्चिम में अधिक होनी चाहिए। उत्तर और पूर्व के भाग नीचे होने चाहिए। भूगर्भ मंजिल केवल उत्तर, पूर्व या उत्तर–पूर्व कोने में होने चाहिए।
3. उत्तर और पूर्व में छज्जे (बालकनी) और (प्लेटफार्म) चबूतरे बनाये जाने चाहिए। उनके फर्श का स्तर उस भवन की मंजिलों के सामान्य स्तर से नीचा रखना बेहतर होता है। इसी भाँति इनके ऊपर की छत का स्तर भी छत के सामान्य स्तर से नीचा होना चाहिए।
4. 'टेरेस' उत्तरपूर्व, उत्तर या पूर्व की ओर होना चाहिए, दक्षिण या पश्चिम में नहीं।
5. पूर्व तथा उत्तर की तरफ दीवारें पतली बनानी चाहिए और दक्षिण तथा पश्चिम की तरफ दीवारें मोटी बनानी चाहिए।
6. अहाते की दीवार उत्तर तथा पूर्व में नीचे तथा पश्चिम और दक्षिण में ऊँची होनी चाहिए।
7. मुख्य छत के स्तर से उत्तर तथा पूर्व के बरामदे के ऊपर की छत दक्षिण में ऊँची होनी चाहिए।
8. कार गैराज, (आउटहाउसेज) बहिर्गृह और नौकरों के कक्ष आदि भूखंड के दक्षिण–पूर्व या उत्तर–पश्चिम कोनों में रखे जा सकते हैं परन्तु उन्हें उत्तर या पूर्व में अहाते की दीवार या भवन का स्पर्श नहीं करना चाहिए और उसकी ऊँचाई मुख्य भवन से कम होनी चाहिए।
9. द्वार मंडल (खुला) पूर्व, उत्तर या उत्तर–पूर्व की तरफ बनाया जा सकता है परन्तु उसे अहाते की दीवार का स्पर्श नहीं करना चाहिए।
10. वृक्षों अथवा वृक्षों की पंक्तियों को दक्षिण तथा पश्चिम की तरफ होना चाहिए, पूर्व तथा उत्तर की तरफ नहीं। पेड़ों की संख्या सम होनी चाहिए विषम नहीं।
11. पूर्वी तथा उत्तरी तरफ बाहर निकलने के क्षेत्र पश्चिमी तथा दक्षिणी तरफ से अधिक होने चाहिए।
12. दरवाजों और खिड़कियों की संख्या के बारे में यह ध्यान रखना चाहिए कि भूमि स्तर की मंजिल और पहली मंजिल में उनकी संख्या समान न हो, कम या अधिक हो सकती है। प्रवेश द्वार को कभी भी मकान के अग्र भाग के मध्य नहीं बनाइए। उसे सदा अनुकूल स्थान पर होना चाहिए परन्तु बिल्कुल अंतिम कोने में नहीं। ऊपरी मंजिल के द्वार को नीचे की मंजिल के द्वारों के अनुरूप होना चाहिए।

13. आर.सी.सी.फ्रेन्ड स्ट्रक्चर में, खम्भों, शहतीरों आदि की संख्या सम होनी चाहिए विषम नहीं।

14. बड़े कमरे या रसोई के दाहिनी या पश्चिमी ओर अटारियाँ (लॉफ्टस्) बनायी जानी चाहिए।

15. ऑफिस या अध्ययन कक्ष आदि में मेज पश्चिमी या दक्षिणी तरफ रखी जानी चाहिए ताकि बैठने वाले का मुख पूर्व या उत्तर की ओर रहे। उत्तर–पूर्व की ओर मुख करके बैठना ध्यान की उच्च स्थिति पाने के लिए बहुत अच्छा है। कोई भी आलमारी या फर्नीचर आदि उत्तरी या पूर्वी दीवार को स्पर्श करते हुए नहीं रखना चाहिए। यदि ऐसा करने की विवशता ही आ जाए तो उसे कम से कम 3'' से 6'' की दूरी पर रखना चाहिए।

16. भवन अथवा निर्माण स्थल के उत्तरी–पूर्वी कोने में कोई भी गंदगी या किसी भी प्रकार के कूड़े का ढेर नहीं लगाना चाहिए। उसे सदा खुला तथा स्वच्छन्द रखना चाहिए।

17. मकान अथवा कमरे के उत्तर–पूर्व कोने में दरवाजे या खिड़कियाँ लगायी जा सकती हैं।

18. रहने वाले कमरे या कक्ष में फर्नीचर, सोफासेट्स आदि को पश्चिम और दक्षिण की तरफ अधिक होना चाहिए। मकान मालिक को पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके बैठना चाहिए और अतिथियों को सोफे पर पश्चिम या दक्षिण की ओर मुख करके बैठना चाहिए।

19. कैशबॉक्सेज या नकद राशि रखने वाले संदूकों (कोष) को उत्तर की ओर वाले कमरे में रखना चाहिए, लेकिन यदि संदूक बहुत भारी हो, तब उसे दक्षिण, पश्चिम अथवा दक्षिण–पश्चिम कोने में रखा जाना चाहिए और 'लॉकर' को खोलते समय मुख उत्तर की ओर रहना चाहिए।

20. सभी भारी घरेलू सामान पश्चिम, दक्षिण तथा दक्षिणी–पश्चिमी ओर रखना चाहिए।

21. रसोई में ग्राइंडर, फ्रिज, आलमारी तथा अन्य भारी सामान दक्षिण तथा पश्चिम की दीवार के तरफ होना चाहिए। भंडार कक्ष (स्टोर रूम) तक में अलमारियों के खाने दक्षिण और पश्चिम की दीवारों में बनाने चाहिए। उत्तर तथा पूर्व दीवारों को स्वतंत्र रखना चाहिए।

22. सभी दर्पणों (शीशों) को उत्तर या पूर्व की दीवारों में लगाना चाहिए, उन्हें दक्षिण अथवा पश्चिम की दीवार में नहीं लगाना है। इसके फलस्वरूप शौचालयों में ही हाथों को धोने का कुंड (वाशबेसिन) उत्तर और पूर्व की दीवारों में लगाया जाएगा। फर्श के ढाल का झुकाव उत्तर–पूर्व की ओर रहेगा।

23. भोजन कक्ष में खाना खाते समय खानेवाले का मुख पूर्व या पश्चिम की ओर रहना चाहिए।

24. ड्राइंग रूम, लिविंग रूम या किसी भी कमरे में टेलीविजन को दक्षिण–पूर्वी कोने में लगाना चाहिए।

25. पलंग या चारपाई को इस तरह बिछाना चाहिए कि सोनेवाले का सिर दक्षिण, पूर्व या पश्चिम की तरफ रहे, सिर कभी भी उत्तर की ओर नहीं रहना चाहिए।

26. सौर ऊर्जा से चलने वाले 'हीटर' को छज्जे (टेरेस) के दक्षिणी–पूर्वी भाग में लगाना चाहिए। ऊपर लगाई जाने वाली जलटंकी छज्जे के दक्षिणी–पश्चिमी कोने में लगाई जानी चाहिए। जीना और लिफ्टरुप को दक्षिण, पश्चिम या दक्षिण–पश्चिम कोने में स्थान देना उचित है।

27. बरसात के पानी का प्रवाह पश्चिम से पूर्व को, दक्षिण से उत्तर की ओर अंत में उसका निकास भूखंड के उत्तर–पूर्व कोने से होना चाहिए।

28. उत्तर और पूर्व के दरवाजों और खिड़कियों में अतिरिक्त 'शटर' या मच्छरों के बचने की जाली नहीं लगाना चाहिए।

29. अहाते के द्वारों (गेट्स) और मुख्य द्वारों को भूखंड या भवन के उत्तर, पूर्व, उत्तर–पूर्व या दक्षिण–पूर्व उत्तर–पश्चिम कोनों में क्रमशः बनवाना चाहिए।

30. पूजाकक्ष उत्तर–पूर्व में, रसोई कक्ष दक्षिण–पूर्व में तथा शयन–कक्षों को दक्षिण, पश्चिम या दक्षिण–पश्चिम कोने में बनाना चाहिए। उत्तर–पूर्व के फर्श का स्तर दक्षिण–पूर्व के स्तर से नीचा रखना चाहिए।

31. अहाते के अंदर लगाये गये लाल रंग के फूलों को बाहर से नहीं दिखना चाहिए।

32. पाषाण मूर्तिकला, रॉक गार्डेन आदि को दक्षिण–पश्चिम कोने में रखना चाहिए क्योंकि वे अपने क्षेत्र के भार को बढ़ा देते हैं।

33. मुख्यद्वार के ठीक सामने कोई कोना, जोड़, खंभा अथवा किसी प्रकार की रुकावट या अवरोध नहीं होना चाहिए।

34. कुआं, बोरवेल, भूमिगत हौदी आदि जैसे जल संग्रह की व्यवस्था भूखंड के उत्तर–पूर्व क्षेत्र में होनी चाहिए।

35. जल संबन्धी कोई व्यवस्था मकान के किसी प्रवेश–द्वार के सामने नहीं होनी चाहिए।

36. भूखंड का स्तर उत्तर–पूर्व में सबसे नीचा और दक्षिण–पश्चिम कोने में सबसे ऊँचा होना चाहिए।

37. दो भिन्न–भिन्न मकानों में कोई भी प्रवेश–द्वार ठीक आमने–सामने नहीं होने चाहिए।

38. भूखण्ड के दोनों ओर उप–पथ नहीं होने चाहिए।

39. एक आवासीय मकान में भिन्न कमरे और साथ में बरामदा भी होना चाहिए।

40. द्वारों, दीवारों या छतों पर निषेध किये गये मूलभाव चित्र (मोटिफ) या मूर्तियाँ नहीं होनी चाहिए।

वास्तु
एक दृष्टि में

साधारणतः वास्तु विज्ञान को किसी पुस्तक या लेख में समा देना लगभग असम्भव है। अपितु इस लेख के माध्यम से ये बताने का प्रयास अवश्य किया गया है कि अपने घर और व्यापारिक स्थल में क्या सावधानी बरत सकते हैं।

घर में :

1) पूर्वोत्तर (N/E) में शौचालय अथवा रसोई न हों।
2) पूर्वोत्तर (N/E) तथा दक्षिण–पश्चिम (S/W) कटा हुआ न हो।
3) प्रमुख द्वार दक्षिण–पश्चिम (S/W) में न हो।
4) प्रधान शयनकक्ष दक्षिण–पूर्व (S/E) तथा पूर्वोत्तर में (N/E) न हो।
5) प्रधान शयनकक्ष दक्षिण–पश्चिम (S/W) में अथवा दक्षिण (S) में हो।
6) रसोई घर अग्नि कोण (S/E) अथवा वायव्य कोण (N/W) में हो।
7) देव स्थान पूर्वोत्तर (N/E) अथवा पूर्व (East) में हो।
8) सीढ़ियाँ घड़ी नुमा (Clock wise) हो।
9) सारे प्रमुख द्वार (Clock wise) खुले।
10) घर का प्रमुख द्वार उत्तर (N) या पूर्व (E) में हो।
11) शौचालय वायव्य कोण (N/W) में या पश्चिम (W) में हो।
12) जल स्थान, बोरिंग पूर्वोत्तर (N/E) में हो।
13) ओवर हेड टंकी दक्षिण–पश्चिम (S/W) में हो।
14) बहुमूल्य वस्तुएँ घर में दक्षिण–पश्चिम (S/W) में अलमारी अथवा तिजोरी में रखें।
15) सोते समय सिरहाना उत्तर (N) में कदापि न हो।

व्यावसायिक स्थल :

1) पूर्वाभिमुख तथा उत्तराभिमुख अर्थात् North Facing & East Facing द्वार ज्यादा उपयोगी है।
2) प्रधान (Head) का बैठने का स्थान दक्षिण पश्चिम (S/W) में होना चाहिए।
3) प्रयास रखें कि सारे कार्यकर्त्ता पूर्व (East) और उत्तर (North) की ओर मुँह करके बैठें।
4) नगदी हमेशा दक्षिण पश्चिम (S/W) में रखें।
5) Beam के नीचे न बैठें तथा यदि Beam हो तो Ceiling करा लें।
6) प्रयास रखें कि दक्षिण पश्चिम (S/W) थोड़ा ऊँचा हो।
7) व्यावसायिक स्थल के आगे कोई बड़ा पेड़ न हो।
8) व्यावसायिक स्थल का पूर्वोत्तर (N/E) तथा दक्षिण–पश्चिम (S/W) कटा हुआ न हो।
9) मुनीम एवं प्रबन्धक इत्यादि पश्चिम में या दक्षिण में बैठें।
10) किसी भी हालत में शौचालय पूर्वोत्तर (N/E) में न हो (यह देव स्थान है)।
11) पीने का पानी पूर्वोत्तर (N/E) में रखें एवं पैन्ट्री (Pantry) अग्नि कोण (S/E) अथवा वायव्य कोण (N/W) में हो।

उपरोक्त बातों में अनेकों अनेक पहलू अभी भी रह गये हैं। जब भी किसी नये घर या व्यावसायिक स्थल का चुनाव करना हो तो उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए भी विशेषज्ञ की सलाह अत्यन्त आवश्यक है।

श्रीकीर्तिदा-वृषभानुकुँवरि श्रीराधा

● कु० दीक्षा शर्मा, कोसीकलाँ

भगवान् के लीला सम्पादनार्थ गोलोक में वसुदामगोप ही श्री वृषभानु गोप होकर इस भूतल पर आये और पितरों की मानसी कन्या कलावती ही रानी कीर्तिदा हुईं। इन्हीं दिव्य दम्पति श्रीकीर्तिदा वृषभानु जी के यहाँ भगवान् की परमाह्लादिनी सार स्वरूपा श्रीराधा स्वेच्छा से पुत्री रूप में प्रगट हुईं। श्रीराधाकृष्ण–युगल तत्वतः **'गिरा अरथ जल वीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न'** हैं। परन्तु भक्तों को परम प्रेम रस का आस्वादन कराकर उन्हें परमानन्द प्रदान करने के लिये नित्य युगल स्वरूप में विराजमान होकर विविध रसमय केलि विलास किया करते हैं। प्रेम की परमावधि श्रीराधा–माधव एक होकर भी दो रूपों में विहार करते हैं और दो रूपों में विहार करते हुए ही एक हैं। यथा–

प्रेयांस्तेऽहं त्वमपि च मम प्रेयसीति हन्त प्रवाद–
स्त्वं मे प्राणा अहमपि तवास्मीति हन्त प्रलापः।
त्वं मे ते स्यामहमिति च यत् तच्चनो साधु राधे,
व्याहारे नौ समुचितो युष्मदस्मत्प्रयोगः।।

अर्थ – (भगवान् श्रीकृष्ण राधा जी से कहते हैं) मैं प्रियतम हूँ और तुम मेरी प्रियतमा हो यह कहना केवल किंवदन्ती मात्र है। तू मेरे प्राण है मैं तेरे प्राण हूँ – यह कहना भी प्रलाप ही करना है। तू मेरी है और मैं तेरा हूँ – यह भी कोई साधु प्रयोग नहीं है। हम दोनों में कभी तू और मैं का किसी प्रकार भी कोई भेद सूचित हो, यह उचित नहीं। अर्थात् हम दोनों में कभी कोई भेद है ही नहीं।

ब्रज लीला में श्रीराधा–माधव की अनादि अनिर्वचनीय प्रीति जन्म से ही देखी जाती है। कीर्तिदा रानी ने अनुपम लावण्य मूर्ति लली को जन्म दिया है। बरसाने ही नहीं सम्पूर्ण ब्रजमण्डल, वस्तुतस्तु समस्त ब्रह्माण्ड परमोल्लसित है। बधाइयाँ बज रही हैं, दान दक्षिणा, भेंट न्योछावरें हो रही हैं। भला वृषभानु बाबा कीर्तिरानी का सुख कौन वर्णन कर सकता है। तब एकाएक श्रीकीर्तिरानी की दृष्टि लली के नेत्रों पर पड़ी। देखा, नेत्र बन्द हैं। बहुत काल तक प्रतीक्षा करने के बाद भी नेत्र नहीं खुले। मैया चिन्तित हो गई, बाबा उदास हो गये, लोगों को भी जब यह मालुम हुआ तो सबके मुखों पर कुछ म्लानता सी छा गई। बहुत उपाय करने पर भी नेत्र बन्द ही रहे। लोग किंकर्तव्य विमूढ़ हो रहे थे। तब तक श्री नन्दरानी अपने लाल को गोद में लिए हुए लली को बधाई लेकर श्रीवृषभानुजी के घर आईं। श्रीकीर्तिरानी के हर्ष का ठिकाना नहीं रहा, जब उन्होंने देखा कि मेरी लाड़िली ने यशोदानन्दन को देखते ही किलकारी मारकर आँखें खोल दीं इस प्रकार श्रीराधाजी ने लीलाकाल में भी सर्वप्रथम श्रीकृष्ण को ही देखा। परमा–ह्लादिनी राधा ने अपने बाल–विनोद से माता–पिता एवं समस्त परिजन पुरजनों को परम आनन्द प्रदान किया।

धीरे–धीरे बड़ी होकर जब वे सखियों के साथ ब्रज की बीथियों एवं यमुना पुलिन आदि स्थलों पर खेलने जाने लगीं तो एक दिन उन्हें अचानक श्यामसुन्दर मिल गये। श्रीसूरदास जी कहते हैं कि– **'सूरश्याम देखते ही रीझे नैन नैन मिलिपरि ठगौरी।।'** फिर तो वे पूछ ही बैठे – **'बूझत श्याम कौन तू गौरी। कहां रहति**

काकी है बेटी देखी नहीं कहूँ ब्रज खोरी।।' श्रीराधा ने कहा–**'काहे को हम ब्रज तन आवति खेलति रहति आपनी पौरी। सुनति रहति श्रवणनि नन्द ढोटा करत रहत माखन दधि चोरी।।'** श्री नन्दनन्दन ने कहा – **'तुम्हरो कहा चोरि हम लैहैं खेलन चलौ संग मिलि जोरी। सूरदास प्रभू रसिक शिरोमणि बातन भुरई राधिका गोरी।।'** तत्पश्चात् श्रीश्यामसुन्दर पुनः खिरक में मिलने का संकेत कर सखामण्डल में जा मिले। इधर श्रीराधा भी घर चली आईं। उस समय के श्रीराधा भाव का चित्रण करते हुये श्रीसूरदास जी लिखते हैं कि –

नागरि मनहिं रहि अरुझाइ।
अति विरह तन भई व्याकुल घर न नेकु सुहाइ।।
श्यामसुन्दर मदन मोहन मोहिनी सी लाइ।
चित्त चंचल कुंवरि राधा खान पान भुलाइ।।
कबहुँ विलपति कबहुँ विहसति सकुचि बहुरि लजाइ।
मातु पितु को त्रास मानति मन बिन भइ बाइ।।
जननिसो दोहिनी माँगति वेगि बैरी माइ।
सूर प्रभू को खिरक मिलिहौ गए मोहि बुलाइ।।

इस प्रकारेण श्रीराधा–माधव का मधुर मिलन कभी गोदोहन के बहाने से खिरक में तो कभी जल भरने के बहाने से यमुना पुलिन पर होता रहता है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में ब्रह्माजी के द्वारा लीला का सम्पादन वर्णित है। कथा आती है कि एक दिन श्रीनन्दबाबा अपने बालकृष्ण को साथ लेकर भाण्डीर वन में गौओं की देखभाल करने गये। गायों की गणना तथा पर्यवेक्षण करके बाबा बालक को गोद में लेकर के एक वृक्षमूल के पास बैठ गये। इतने में चारों ओर से काली घटायें छा गयीं। वर्षा के साथ बड़े जोर–जोर से हवा चलने लगी। यह सब देखकर नन्दजी को बड़ा भय हुआ। उस समय श्रीकृष्ण वर्षा–बिजली के भय से रोने लगे। तब और उपाय न देखकर व्रजेश्वर एकान्त मन में नारायण का स्मरण करने लगे। इसी समय वहाँ नित्य किशोरी श्रीराधा प्रगट हो गयीं। उस निर्जन वन में उन्हें देखकर प्रथम तो नन्दजी को बड़ा विस्मय हुआ, परन्तु बाद में श्रीगर्गजी के वचनों का स्मरण कर और उन्हें नित्य श्रीहरिप्रिया जानकर अञ्जलि बाँधकर प्रणाम किया और भक्ति का वरदान माँगा। दूसरे ही क्षण भगवान् की लीला शक्ति से मोहित होकर पुनः माधुर्य भाव से भावित होकर, भयभीत श्रीकृष्ण को राधा के हाथ में दे दिया।

श्रीराधा श्रीकृष्णचन्द्र को लेकर गहन वन में प्रविष्ट हो गईं। वहाँ श्रीराधाजी के स्मरण करते ही परम दिव्य रास मण्डल प्रकट हो गया। सहसा नन्द–सुवन श्रीकृष्ण राधा की गोद से अन्तर्हित हो जाते हैं और जब वह अकपकाकर देखने लगती हैं तो वह कोटि–कोटि कन्दर्प–दलनपटीयान नित्य किशोर श्रीकृष्ण उन्हें पुष्पमयी शय्या पर विराजमान दीख पड़े। रासेश्वरी उस परम मनोहर रूप को देखकर मोहित हो गईं। परस्पर प्रेमावलोकन पूर्वक अतीत का स्मरण कर श्रीराधा–माधव प्रणयवार्ता करते हुये भावसिन्धु में निमग्न होने ही वाले थे कि इसी बीच श्रीब्रह्माजी श्रीहरि के सामने आये। आज युगल–चरणारविन्दों का दर्शन कर श्रीब्रह्मा जी ने पुष्कर तीर्थ में की गई साठ हजार वर्ष की तपस्या को सफल माना। स्तुति–प्रणामोपरान्त श्रीब्रह्माजी अविचल प्रेम लक्षणा भक्ति का वरदान पाकर कृतार्थ हुए। भगवान् की इसके बाद की इच्छा शक्ति से प्रेरित होकर विधाता ने विधिपूर्वक वेदमन्त्रों द्वारा

श्रीराधा–माधव का विवाह कराया। दक्षिणा में श्रीब्रह्माजी ने युगल के श्रीचरणकमलों में प्रेम माँगा। श्रीब्रह्माजी के चले जाने पर युगल ने विविध प्रेम क्रीड़ायें कीं। उसके बाद कृष्ण पुनः बाल रूप हो जाते हैं और श्रीराधा उन्हें लेकर मैया यशोदा के पास आती हैं। इसी प्रकार 'एक प्राण द्वै देह' श्रीराधा–माधव का नित्य विहार होता रहता है।

श्रीराधा–माधव की इच्छा शक्ति ही उनकी प्रिय सखियाँ हैं। यथा –

1. **श्रीललिताजी–** ये युगल की ताम्बूल सेवा करती हैं।
2. **श्रीविशाखाजी–** कर्पूरादि की सेवा करती हैं।
3. **श्रीचित्राजी–** युगल की वस्त्र सेवा करती हैं।
4 **श्रीइन्दुलेखाजी–** नृत्य गान से प्रियाप्रीतम को रिझाती हैं।
5. **श्रीचम्पकलताजी–** श्रीयुगल की चँवर डुलाने की सेवा करती हैं।
6. **श्रीरंगदेवीजी–** श्रीयुगल को आभूषण धारण कराने की।
7. **श्रीतुंगविद्याजी–** श्रीयुगल की जल सेवा करती हैं।
8. **श्रीसुदेवीजी–** श्रीयुगल की जल सेवा करती हैं। यथा –

सखी चहुँ ओर फिरै चकडोरि सी
सेवा कौ भाव बढ्यौ मनमांहीं।
सौंज सिंगार नई नई आनत
बानत नैकहु हारत नाहीं।।
प्रेम पगी तिहि रंग रंगी
निरखै तिनकौ तन कौ न अघाही।
और सवाद लगै ध्रुव फीको रहैं,
विविध रूप के छत्र की छाहीं।।

एक बात यहाँ स्मरण रखने को है – सभी सखियाँ सब प्रकार की सेवा में प्रवीण हैं और यथा समय करती भी हैं परन्तु एक–एक सेवा इनकी प्रधान सेवा है। सखियों का सेवा में बड़ा उल्लास है। इनकी लीलाओं का पार नहीं है।

श्री
रा   धा

परम धन राधानाम अधार।
जाहि श्याम मुरली में टेरत
सुमिरत बारम्बार।।
जन्त्र मन्त्र और वेद मन्त्र में
सबै तारकौ तार।
श्रीशुक प्रकट कियौ नहीं यातै
जानि सार को सार।।
कोटि रूप धरैं नन्दनन्दन
तौऊ न पायो पार।
'व्यासदास' अब प्रगट बखानत
डारि भार में भार।।

श्रीकृष्णप्रिया श्रीतुलसी

● श्रीगणेशदास जी चुघ, रामायण विशारद

श्रीतुलसी भगवान् श्रीकृष्ण की प्रेयसी है एवं श्रीकृष्ण–भक्ति को देने वाली है। वायुपुराण में लिखा है कि श्रीहरि तुलसी के बिना पूजा ग्रहण नहीं करते। अतएव यदि तुलसी न हो तो उसका काष्ठ श्रीहरि के श्रीविग्रह से स्पर्श कराना चाहिए और काष्ठ भी न हो तो केवल तुलसी का नाम–कीर्तन करके श्रीहरि की पूजा करनी चाहिए। तुलसी के पत्रों से केवल श्रीहरि की ही पूजा करनी चाहिए, अन्य देवताओं की नहीं। तुलसी के पत्रों से अन्य देवताओं की पूजा करने से बड़ा भारी पाप होता है। श्रीभगवान् को नैवेद्य समर्पण करने में भी तुलसी दल का होना आवश्यक है– ऐसा गरुड़ पुराण में नैवेद्य–प्रसंग में कहा गया है।

तुलसीदल संमिश्रं हरेर्यच्छेच्च तत् सदा।

तुलसी की परम उत्तमता का वर्णन करते हुए स्कन्दपुराण में कहा गया है कि अमृत मन्थन के समय पर समस्त जीवों के हित के लिये श्रीहरि ने समस्त औषधियों के रस के द्वारा तुलसी की सृष्टि की है। जिसके पत्ते खण्डित न हों, जो हरे रंग की हो और जो मनोहर मञ्जरी से युक्त हो–ऐसी तुलसी श्रेष्ठ मानी जाती है। श्रीभगवान् के प्रति अर्पण किये जाने पर तुलसी पापों का हरण करती है, वैरियों का नाश करती है, समस्त सम्पत्तियों को प्रदान करती है, परम पुण्यों का फल देती है, समस्त सिद्धियाँ देती है, मुक्ति प्रदान करती है, श्रीवैकुण्ठ लोक की प्राप्ति कराती है तथा श्रीभगवान् की प्रसन्नता प्राप्त कराती है। कार्तिक में, माघ में, चातुर्मास्य में और वैशाख में तुलसी के पत्रों से श्रीहरि की पूजा करने से अनेक गुणा अधिक फल का वर्णन पुराणों में किया गया है।

बिना स्नान किये तुलसी का चयन नहीं करना चाहिए। संक्रान्ति, अमावस्या, पूर्णिमा, द्वादशी और रविवार के दिन तुलसी का चयन निषिद्ध होते हुए भी श्रीहरि–भक्तों को केवल द्वादशी के दिन ही तुलसी का चयन नहीं करना चाहिए। अर्थात् वे द्वादशी को छोड़कर अन्य सभी दिनों में तुलसी का चयन श्रीहरि की सेवा के लिए कर सकते हैं। तुलसी का चयन करते हुए भक्तों को यह कहते हुए तुलसी को प्रणाम करना चाहिए कि "हे तुलसि! तुम सर्वदा श्रीकेशव की प्रिया हो। मैं उन केशव की आराधना के लिए आपका चयन कर रहा/रही हूँ। हे शोभने! आप मेरे लिये वर प्रदान करने वाली होओ–

तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया।
केशवार्थे विचिन्वामि वरदा भव शोभने।।

(श्रीहरिभक्तिविलास–7/104)

और तब बायें हाथ से तुलसी की शाखा को पकड़कर दायें हाथ से एक–एक करके तुलसी के पत्रों एवं मञ्जरी का भी चयन करके उनको उत्तम पात्र में रखना चाहिए। बासी तुलसी यहाँ तक कि सूखी तुलसी को भी श्रीहरि प्रसन्नता से स्वीकार करते हैं–

गृह्णाति तुलसीं शुष्कामपि पर्य्युषितां हरिः।।

(श्रीहरिभक्ति विलास–7/75)

तुलसी दल से मिले हुए जल को गंगा के समान कहा गया है, जिससे स्नान का माहात्म्य गरुड़ पुराण में वर्णन किया गया है। इसी प्रकार स्कन्दपुराण में तुलसी के मूल की मिट्टी एवं तुलसी के काष्ठ की महिमा का वर्णन किया गया है। श्रीप्रह्लाद संहिता में बताया गया है कि तुलसी के पत्र, पुष्प, फल, काष्ठ, त्वक् (छाल),

शाखा, पल्लव, अंकुर, मूल एवं मिट्टी आदि सभी पावन हैं–पवित्र करने वाले हैं–

पत्रं पुष्पं फलं काष्ठं त्वक्शाखापल्लवांकुरम्।
तुलसीसम्भवं मूलं पावनं मृत्तिकाद्यपि।।

तुलसी काष्ठ से जपमाला एवं कण्ठमाला के निर्माण का भी अक्षय फल है। स्कन्दपुराण में तुलसी के पत्रों को मस्तक, कर्ण आदि में धारण करने की महिमा का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार से तुलसी–पत्रों के भक्षण का माहात्म्य भी वर्णन किया गया है। स्कन्दपुराण में श्रीभगवान् ने श्रीयमराज को बताया है कि मृत्यु के समय पर यदि किसी व्यक्ति के मुख में, मस्तक पर या शरीर पर तुलसी दल हो तो उसकी दुर्गति कभी नहीं होती।

इस तुलसी की महिमा अद्भुत है–तुलसी का गिरा हुआ पत्र एवं इससे गिरा हुआ जल भी पवित्र कर देता है तथा इसके मूल की मिट्टी को भी ललाट पर लगाने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

यद्यपि श्रीतुलसी के पत्र को ग्रहण करने की इतनी महिमा का वर्णन किया गया है, फिर भी वैष्णव भक्तों को कभी भी श्रीकृष्ण को अर्पण किये बिना उसका सेवन नहीं करना चाहिए।

श्रीमत्तुलस्याः पत्रस्य माहात्म्यं यद्यपीदृशम्।
तथापि वैष्णवैस्तन्न ग्राह्यं कृष्णार्पणं विना।।

(श्रीहरिभक्ति विलास–9/64)

जहाँ एक ओर श्रीतुलसी के द्वारा श्रीकृष्ण की आराधना के माहात्म्य का वर्णन किया गया है, वहीं दूसरी ओर श्रीकृष्ण की प्रेयसी तुलसी की भी सेवा–पूजा का वर्णन प्राप्त होता है।

अगस्त्यसंहिता में कहा गया है कि चारों वर्णों एवं चारों आश्रमों के स्त्री–पुरुष सभी को तुलसी की आराधना करने का अधिकार है। स्कन्दपुराण के अनुसार तुलसी की उपासना नौ प्रकार की है, जैसे प्रतिदिन तुलसी का (1) दर्शन (2) स्पर्शन (3) स्मरण (4) कीर्त्तन (5) वन्दन (6) गुण–श्रवण (7) रोपण (8) जल–सिंचन आदि के द्वारा सेवा, तथा (9) गन्ध–पुष्प आदि के द्वारा पूजा। जो व्यक्ति उक्त नौ प्रकार से प्रतिदिन तुलसी की भक्ति करते हैं, वे कोटि सहस्र युगों तक श्रीहरि के धाम में निवास करते हैं।

दर्शन करने पर जो तुलसी समस्त पापों का नाश करती है, स्पर्श करने पर जो शरीर को पवित्र करती है–दुष्ट जाति में जन्म होने से दोष का शोधन करती है, प्रणाम करने पर जो रोगों का एवं क्लेश मात्र का नाश करती है, जल के द्वारा सींचने पर जो यम के भय का निवारण करती है, संरोपण करने पर जो श्रीकृष्ण के चरणों में मन का अभिनिवेश दान करती है, एवं श्रीकृष्ण के चरणों में अर्पण करने पर जो विमुक्ति (प्रेमभक्ति) रूप फल प्रदान करती है–ऐसी तुलसी को मैं नमस्कार करता हूँ–

या दृष्टा निखिलाघसंघशमनी स्पृष्टा वपुः पावनी,
रोगाणामभिवन्दिता निरसिनी सिक्तान्तकत्रासिनी।
प्रत्यासक्तिविधायिनी भगवतः कृष्णस्य संरोपिता,
न्यस्ता तच्चरणे विमुक्तिफलदा तस्यै तुलस्यै नमः।।

(श्रीहरिभक्ति विलास–9/33)

अन्त में श्रीतुलसी के प्रति प्रार्थना करते हैं–

श्रियं देहि यशो देहि कीर्तिमायुस्तथा सुखम्।
बलं पुष्टिं तथा धर्मं तुलसी त्वं प्रसीद मे।।

(श्रीहरिभक्ति विलास)

–हे तुलसि! मुझ पर प्रसन्न होओ, मुझे भक्तिरूपी सम्पत्ति, यश, कीर्ति, आयु, सुख, बल, पुष्टि तथा धर्म प्रदान करो।

❐

प्रेमाभक्ति

● डॉ. भागवत कृष्ण नांगिया

श्रीकृष्ण प्रेम–प्राप्ति का साधक जब भक्ति के विभिन्न साधनों द्वारा जिस भक्ति में प्रविष्ट होता है, उसे "साधन भक्ति" कहा जाता है। यह साधन भक्ति समय अन्तराल से गाढ़तर एवं पुनः गाढ़तम अवस्था को प्राप्त करती है। इसी क्रम में दृढ़तापूर्वक साधन भक्ति का आचरण करने पर जब उसका फल उदय होता है उस अवस्था में श्रीकृष्ण की कृपा से तथा उनके ही भक्तों की कृपा से "भाव भक्ति" का उदय होता है। भावभक्ति में प्रविष्ट होने पर चित्त की मलिनता दूर हो जाती है। तत्पश्चात् वह कृष्णरति गाढ़ता को प्राप्त कर प्रेम में बदल जाती है। प्रेम के उदित होने पर चित्त अतिशय स्निग्ध हो जाता है। अर्थात् इतना चिकना हो जाता है कि कोई अन्य कामना, अन्य वांछा उसमें टिक ही नहीं पाती। श्रीकृष्ण में भक्त की अत्यन्त ममता बुद्धि पैदा हो जाती है। भक्त का प्रेम किसी भी अवस्था में नष्ट नहीं होता। उसकी वाणी, कार्यकलाप–आचरण सभी प्रेममय हो जाते हैं। प्रेम में उसकी ऐसी अनिर्वचनीय अवस्था हो जाती है कि अच्छे–अच्छे विद्वान् भी उसे नहीं समझ पाते।

प्रेम–उदय होने का भी एक सुनिश्चित क्रम है। श्रीरूप गोस्वामी ने कहा है –

आदौ श्रद्धा ततः साधुसंगोऽथ भजनक्रिया।
ततोऽनर्थ निवृत्तिः स्यात्ततो निष्ठा रुचिस्ततः।।
अथासक्तिस्ततो भावस्ततः प्रेमाभ्युदंचति।
साधकानामयं प्रेम्णः प्रादुर्भावे भवेत क्रमः।।

– श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु 1/4/15–16

सर्वप्रथम साधक में श्रद्धा का उदय होता है अर्थात् शास्त्र वचनों में विश्वास, उसके बाद साधुसंग, तदुपरान्त भजन क्रिया, पुनः अनर्थ निवृत्ति, फिर निष्ठा, फिर रुचि, फिर आसक्ति तथा तदनन्तर भाव (रति) का उदय होता है। भाव के गाढ़ होने पर प्रेम का उदय होता है।

श्रद्धा का उदय होने से भी पूर्व साधक को सर्वप्रथम किसी साधु या महत्पुरुष की कृपा और संग प्राप्त होता है जिससे उसे शास्त्रों के सुनने का अवसर प्राप्त होता है। उसके बाद "श्रद्धा" का आविर्भाव होता है। श्रद्धा के बाद भजन–प्रणाली की शिक्षा हेतु पुनः साधु–संग की आवश्यकता रहती है। "साधुसंग" से तात्पर्य है महत्पुरुषों के पास निरन्तर आना–जाना, उनके मुख से भगवत् कथा श्रवण करना, उनकी सेवा–परिचर्या करते हुए उनसे पारमार्थिक जिज्ञासा करना और उनके द्वारा उपदिष्ट आचरणों का पालन करना। "भजन क्रिया" से नवविधा भक्ति का अनुशीलन अभिप्रेत है। ओर फिर भजन क्रिया से "अनर्थ निवृत्ति" होती है। अर्थात् दुष्कृत–जात, सुकृत जात, अपराध जात एवं भक्ति जात इन चार प्रकार के अनर्थों की निवृत्ति होती है।

यहाँ तक के सभी आचरण साधन भक्ति के अन्तर्गत आते हैं।

अनर्थ निवृत्ति के बाद "निष्ठा" का उदय होता है– निष्ठा का अर्थ है– विक्षेपरहित निरन्तर अविचलित और अविच्छिन्न भाव से सदा साधन के अनुष्ठान में रत रहना। निष्ठा के पश्चात् "रुचि" अर्थात् बुद्धिपूर्वक भगवान् की प्राप्ति की दृढ़ अभिलाषा और भगवत् नाम, गुण, लीला, माधुर्य का अनुभव होता है। रुचि के बाद में "आसक्ति" अर्थात् भगवान् में अभिनिवेश होता है। भजन आचरण में इस आसक्ति के गाढ़ होने पर ही "भाव" का उदय हुआ करता है। ये सभी

आचरण भाव–भक्ति के अन्तर्गत आते हैं। और जब भाव अति गाढ़तम अवस्था को प्राप्त होता है तब प्रेम का आविर्भाव होता है।

प्रेम विकास के भी फिर अन्यान्य स्तर हैं– जैसे–रति, स्नेह, मान, प्रणय, राग, अनुराग, भाव और महाभाव। किन्तु इस जगत् के साधकों में प्रेम पर्यन्त ही आविर्भाव होता है। स्नेहादि प्रेम के अन्य रूप इस वर्तमान शरीर में प्रकट नहीं होते। प्रेम का सबसे ऊँचा स्तर महाभाव है। लेकिन महाभाव की अवस्था में भी पूर्व के सभी भाव या स्तर वर्तमान रहते हैं। प्रेम में भाव की और भाव में उससे पूर्व की सभी अवस्थायें साधक में विद्यमान रहती हैं। सांख्य मत की भांति विकास के उत्तरोत्तर स्तर अपने पूर्व की अवस्थाओं का त्याग कर दें –ऐसी बात नहीं। अतः जिस साधक में जो भाव पूर्वावस्था में रहता है वही भाव प्रेम में भी वर्तमान रहता है।

प्रेम के दो प्रकार बताये गये हैं। 1–भाव से उत्पन्न अर्थात् भावोत्थ, 2–भगवत् कृपा से उत्पन्न अर्थात् हरिप्रसादोत्थ।

1–अन्तरंग भक्ति अंगों का निरन्तर अनुष्ठान करने से जब भाव परम उत्कर्ष को प्राप्त करता है, तब उस भाव को ''भावोत्थ प्रेम'' कहा जाता है। साधन भक्ति के वैधी एवं रागानुगा भेद के अनुसार भावोत्थ प्रेम भी दो प्रकार का है –

(अ) वैधभावोत्थ प्रेम

(ब) रागानुगीय भावोत्थ प्रेम

(अ) जो वैधी भक्ति के साधन से उत्पन्न प्रेम है वह वैध–भावोत्थ प्रेम है। इसका लक्षण दिखाते हुए बताया है– इस प्रकार जो व्यक्ति अपने प्रिय श्रीभगवान् का व्रतरूप में ग्रहण करके नामकीर्तन करता है, उसमें कीर्तन से अनुराग उदय होता है। उस अनुराग के फलस्वरूप वह लोक अपेक्षा से रहित होकर उच्च स्वर से कभी हँसता है, कभी रोता है, कभी चीत्कार करता है ओर कभी उन्मत्त की तरह नृत्य करने लगता है।

(ब) भगवान् का ध्यान रागानुगा मार्ग का साधन है। ध्यान करते समय साधक में पहले भाव का उदय होता है और फिर प्रेम का आविर्भाव होता है। अतः इसे रागानुगीय भावोत्थ प्रेम कहते हैं।

2–भगवत्–कृपा से उत्पन्न प्रेम वह है जो भगवान् की अति कृपा से भगवान् के ही संग दान से आरम्भ होता है या प्रकट होता है। श्रीमद्भागवत में भगवान् श्रीकृष्ण ने उद्धव के प्रति कहा है –''सुग्रीव, हनुमान् यज्ञपति आदिक ने वेदाध्ययन नहीं किया था, वेदाध्ययन के लिए उन्होंने वेद–निष्णात महत्पुरुषों की भी उपासना नहीं की, किसी अन्य प्रकार का व्रत–आचरण भी नहीं किया, कष्ट साध्य कोई तपस्या भी नहीं की केवल मेरे संग के कारण उन्होंने मुझे प्राप्त कर लिया।''– यह भगवत् अतिप्रसादोत्थ प्रेम का उदाहरण है।

यह प्रेम भी दो प्रकार का है –

(अ) माहात्म्यज्ञानयुक्त प्रेम

(ब) केवल अर्थात् माधुर्यमात्र ज्ञानयुक्त प्रेम।

(अ) विधिमार्ग के साधक के चित्त में भगवान् के माहात्म्य तथा ऐश्वर्य का ज्ञान प्रधानरूप से रहता है अतः विधिमार्ग के साधनों से जो प्रेम उदित होता है वह माहात्म्यज्ञान युक्त प्रेम है।

(ब) रागानुगा मार्ग के साधनों की परिपक्वता में साधक के चित्त में श्रीभगवान् के माहात्म्य का ज्ञान एवं ऐश्वर्य का ज्ञान तो रहता ही है लेकिन माधुर्य की प्रबलता रहती है। इससे जो प्रेम उत्पन्न होता है, वह है केवल प्रेम। वैधी भक्ति का थोड़ा सा भी अंश रहने पर साधक को केवल प्रेम की प्राप्ति नहीं होती। ❐

।। श्रीगणेशाय नमः।।

सं0 2066 मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

सूर्य दक्षिणायण • सूर्योदय 06/29 • सूर्यास्त 05/31 • शरद् ऋतु (ता0 03 नवम्बर से 16 नवम्बर 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
03/11	मंगलवार	प्रतिपदा (12.15)	भरणी (08.07)	कार्तिक व्रत की पारणा, चन्द्र वृष राशि पर रात्रि 01/59 से *
04/11	बुधवार	द्वितीया (10.58)	कृत्तिका (07.34)	***********************************
05/11	गुरुवार	तृतीया (09.19)	रोहिणी 06.40 सायं	भद्रा दिन में 10/08 से रात्रि 09/19 तक, चन्द्र मिथुन राशि पर रात्रि शेष 06/04 पर, **संकष्टी श्री गणेश 04 चतुर्थी व्रत**, चन्द्रोदय रात्रि 07/19 पर *
06/11	शुक्रवार	चतुर्थी (07.22)	मृगशिरा 05.27 सायं	*
07/11	शनिवार	पंचमी 05.13	आर्द्रा 04.00	*
08/11*	रविवार	षष्ठी 02.55	पुनर्वसु 02.24	**रवि-पुष्य योग दिन में 02/24 के पश्चात्**, चन्द्र कर्क राशि पर दिन में 08/48 से *
09/11	सोमवार	सप्तमी 11.33	पुष्य 12.44	**श्री भैरवाष्टी 08 व्रत**, श्लेषा के मूल आरंभ *
10/11	मंगलवार	अष्टमी 10.10	श्लेषा 11.04	मूल चल रहे हैं, चन्द्र सिंह राशि पर दिन में 11/04 से, अष्टका श्राद्ध *
11/11	बुधवार	नवमी 07.54 प्रातः	मघा 09.30	भद्रा सायं 06/51 से रात्रि शेष 05/47 तक, मूल समाप्त दिन में 09/30 पर, दशमी समाप्त रात्रि शेष 05/47 पर *
12/11	गुरुवार	एकादशी (03.55)	पू.फा. 08.06	चन्द्र कन्या राशि पर दिन में 01/49 से, **उत्पन्ना 11 एकादशी व्रत स्मार्त्तों का** *
13/11	शुक्रवार	द्वादशी (02.24)	उ.फा. 06.59 प्रातः	वैष्णवों का एकादशी व्रत *
14/11	शनिवार	त्रयोदशी (01.16)	चित्रा (05.45)	भद्रा रात्रि 01/16 से, चन्द्र तुला राशि पर सायं 05/59 से, **शनि प्रदोष 13 व्रत** *
15/11	रविवार	चतुर्दशी (12.33)	स्वाती (05.46)	भद्रा दिन में 12/55 तक, **मास शिवरात्रि 14 व्रत** *
16/11	सोमवार	अमावस्या (12.20)	विशाखा (06.17)	चन्द्र वृश्चिक राशि पर रात्रि 12/10 से, स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, **सोमवती अमावस्या** *

*=शुभ दिन, ( )=रात, -=दिन

।। श्रीगणेशाय नमः।।

सं0 2066 मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

सूर्य दक्षिणायण • सूर्योदय 06/37 • सूर्यास्त 05/23 • हेमन्त ऋतु (ता0 17 नवम्बर से 02 दिसम्बर 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
17/11*	मंगलवार	प्रतिपदा (12.38)	अनुराधा 60.00 समस्त	**रुद्र व्रत (पीड़िया),** सौर मार्गशीर्ष मास आरंभ ★
18/11	बुधवार	द्वितीया (01.30)	अनुराधा 07.18	ज्येष्ठा के मूल आरंभ प्रातः 07/18 से ★
19/11	गुरुवार	तृतीया (02.46)	ज्येष्ठा 08.49	मूल चल रहे हैं, चन्द्र धनु राशि पर दिन में 08/49 से ★
20/11	शुक्रवार	चतुर्थी (04.30)	मूल 10.47	मूल समाप्त दिन में 10/47 पर, भद्रा दिन में 03/39 से 04/30 तक, **वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत** ★
21/11*	शनिवार	पंचमी (06.30)	पू.षा. 01.04	चन्द्र मकर राशि पर रात्रि 07/42 पर, श्रीराम विवाह उत्सव 05, द्वितीया नाग 05 पंचमी ★
22/11*	रविवार	षष्ठी 60.00 समस्त	उ.षा. 03.37	श्री स्कन्दषष्ठी 06 व्रत, **चम्पा षष्ठी व्रत (महाराष्ट्र)** ★
23/11	सोमवार	षष्ठी 08.40	श्रवण 06.13 सायं	★
24/11	मंगलवार	सप्तमी 10.48	धनिष्ठा (08.46)	चन्द्र कुम्भ राशि पर दिन में 07/30 से, पंचक आरंभ दिन में 07/30 से, भद्रा दिन में 10/48 से रात्रि 11/45 तक ★
25/11	बुधवार	अष्टमी 12.42	शतभिषा (11.02)	पंचक, बुधाष्टमी 08 व्रत ★
26/11	गुरुवार	नवमी 02.18	पू.भा. (12.57)	चन्द्र मीन राशि पर सायं 06/28 पर, **श्री नन्दा नवमी 09 व्रत,** पंचक ★
27/11	शुक्रवार	दशमी 03.26	उ.भा. (02.26)	भद्रा रात्रि 03/47 से, पंचक, रेवती के मूल आरंभ रात्रि 02/26 पर★
28/11	शनिवार	एकादशी 04.07	रेवती (03.25)	मूल चल रहे हैं, पंचक समाप्त रात्रि 03/25 पर, भद्रा दिन में 04/07 तक, **मोक्षदा एकादशी 11 व्रत, गीता जयंती,** चन्द्रमा मेष राशि पर रात्रि 03/25 से ★
29/11	रविवार	द्वादशी 04.15	अश्विनी (03.53)	मूल समाप्त रात्रि 03/53 पर, **प्रदोष 12 व्रत** ★
30/11	सोमवार	त्रयोदशी 03.29	भरणी (03.53)	★
01/12	मंगलवार	चतुर्दशी 03.01	कृत्तिका (03.23)	भद्रा दिन में 03/01 से रात्रि 02/23 तक, चन्द्र वृष राशि पर दिन में 09/45 से, व्रत की पूर्णिमा, **दत्तात्रेय अवतार** ★
02/12	बुधवार	पूर्णिमा 01.45	रोहिणी (02.36)	स्नान-दान की पूर्णिमा ★

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

।। श्रीगणेशाय नमः।।

सं0 2066 पौष कृष्ण पक्ष

सूर्य दक्षिणायण • सूर्योदय 06/44 • सूर्यास्त 05/16 • हेमन्त ऋतु (ता0 03 दिसम्बर से 16 दिसम्बर 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
03/12	गुरुवार	प्रतिपदा	मृगशिरा	चन्द्र मिथुन राशि पर दिन में 02/01 से ★
		12.07	(01.26)	
04/12	शुक्रवार	द्वितीया	आर्द्रा	भद्रा रात्रि 09/05 से ★
		10.10	(12.01)	
05/12	शनिवार	तृतीया	पुनर्वसु	चन्द्र कर्क राशि पर दिन में 04/51 से, भद्रा प्रातः 08/01 तक, **संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत,** चन्द्रोदय रात्रि 08/23, चतुर्थी समाप्त रात्रि 04/27 पर ★
		08.01 प्रातः	(10.27)	
06/12★	रविवार	पंचमी	पुष्य	**रवि पुष्य योग रात्रि 08/47 तक,** श्लेषा के मूल रात्रि 08/47 से ★
		(03.21)	(08.47)	
07/12	सोमवार	षष्ठी	श्लेषा	मूल चल रहे हैं चन्द्र सिंह राशि पर रात्रि 07/06 से, भद्रा रात्रि 01.01 से ★
		(01.01)	(07.06)	
08/12	मंगलवार	सप्तमी	मघा	भद्रा दिन में 11/55 तक, मूल समाप्त सायं 05/31 पर ★
		(10.48)	05.31 सायं	
09/12	बुधवार	अष्टमी	पू.फा.	चन्द्र कन्या राशि पर रात्रि 09/46 से, **अष्टका श्राद्ध, बुधाष्टमी 08 व्रत** ★
		(08.43)	04.04	
10/12	गुरुवार	नवमी	उ.फा.	भद्रा रात्रि शेष 06/10 से, अनु अष्टका श्राद्ध ★
		06.54 सायं	02.51	
11/12	शुक्रवार	दशमी	हस्त	भद्रा सायं 05/25 तक, चन्द्र तुला राशि पर रात्रि 01/43 से ★
		05.25 सायं	02.00	
12/12	शनिवार	एकादशी	चित्रा	**सफला 11 एकादशी व्रत सबका** ★
		04.20	01.27	
13/12	रविवार	द्वादशी	स्वाती	**प्रदोष 12 व्रत** ★
		03.42	01.22	
14/12	सोमवार	त्रयोदशी	विशाखा	भद्रा दिन में 03/32 से रात्रि 03/43 तक, **मास शिव रात्रि 13 व्रत,**
		03.32	01.44	चन्द्र वृश्चिक राशि पर दिन में 07/39 से ★
15/12	मंगलवार	चतुर्दशी	अनुराधा	ज्येष्ठा के मूल आरंभ दिन में 02/37 पर ★
		03.54	02.37	
16/12	बुधवार	अमावस्या	ज्येष्ठा	स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, चन्द्र धनु राशि पर दिन में 04/02 से, शुक्रास्त पूर्व में दिन में 04/52 पर, **खर मास आरंभ** ★
		04.49	04.02	

तारा लग गया

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

।। श्रीगणेशाय नमः।।

सं0 2066 पौष शुक्ल पक्ष

सूर्य दक्षिणायण • सूर्योदय 06/47 • सूर्यास्त 05/13 • हेमन्त ऋतु (ता0 17 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
17/12	गुरुवार	प्रतिपदा 06.08 सायं	मूल 05.53 सायं	सौर पौष मासारंभ, मूल समाप्त सायं 05/53 पर ★
18/12	शुक्रवार	द्वितीया (07.55)	पू.षा. (08.07)	चन्द्र मकर राशि पर रात्रि 02/44 पर ★
19/12	शनिवार	तृतीया (09.59)	उ.षा. (10.36)	★
20/12★	रविवार	चतुर्थी (12.07)	श्रवण (01.14)	भद्रा दिन में 11/03 से रात्रि 12/07 तक, **रविवति वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत** ★
21/12	सोमवार	पंचमी (02.15)	धनिष्ठा (03.48)	चन्द्र कुंभ राशि पर दिन में 02/31 से, पंचकारंम्भ दिन में 02/31 से
22/12	मंगलवार	षष्ठी (04.09)	शतभिषा (06.09)	पंचक ★
23/12	बुधवार	सप्तमी (05.44)	पू.भा. 60.00 समस्त	भद्रा रात्रि शेष 05/44 से, चन्द्र मीन राशि पर रात्रि 01/41 से, पंचक★
24/12	गुरुवार	अष्टमी 60.00 समस्त	पू.भा. 08.11 प्रातः	भद्रा सायं 06/17 तक, पंचक '**महाभद्राष्टमी 08 व्रत** ★
25/12	शुक्रवार	अष्टमी 06.50 प्रातः	उ.भा. 09.45	पंचक, रेवती के मूलारंभ दिन में 09/45 पर ★
26/12	शनिवार	नवमी 07.29	रेवती 10.53	मूल चल रहे हैं, पंचक समाप्त दिन में 10/53 पर, चन्द्र मेष राशि पर दिन में 10/53 पर ★
27/12	रविवार	दशमी 07.35	अश्विनी 11.29	मूल समाप्त दिन में 11/29 पर, भद्रा रात्रि 07/23 से, **पुत्रदा 11 एकादशी व्रत (स्मार्त्तों का)** ★
28/12	सोमवार	एकादशी 07.11 प्रातः	भरणी 11.35	भद्रा प्रातः 07/11 तक, चन्द्र वृष राशि पर सायं 05/30 पर, वैष्णवों का एकादशी व्रत ★
29/12	मंगलवार	त्रयोदशी (04.59)	कृत्तिका 11.15	**भौम प्रदोष 13 व्रत** ★
30/12	बुधवार	चतुर्दशी (03.20)	रोहिणी 10.30	भद्रा रात्रि 03/20 से, चन्द्र मिथुन राशि पर रात्रि 09/58 से ★
31/12	गुरुवार	पूर्णिमा (01.23)	मृगशिरा 09.25	स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा, भद्रा दिन में 02/21 तक, **शाकम्भरी जयंती,** माघ स्नान के नियम आरंभ, **चन्द्र ग्रहण** ★

आज चन्द्र ग्रहण

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

प्रेम-प्रचार

उपलब्ध DVD/CD/MP3

(I) श्रीभागवत कथा सम्पूर्ण
(II) श्रीराम कथा सम्पूर्ण
(III) नन्दोत्सव
(IV) उद्धव गोपी सम्वाद
(V) रासलीला
(VI) सुदामा चरित्र
(VII) अन्य भजन

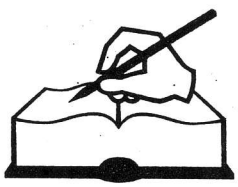

उपलब्ध साहित्य

(I) श्रीमद् भागवत सार
(II) श्रीमद् भागवत संदेश

श्रीठाकुर जी के प्रवचनों की DVD/CD/MP3 एवं उनके द्वारा प्रचारित श्रीमद् भागवत संदेश व अन्य साहित्य आप संस्थान के निम्नलिखित प्रतिनिधियों से प्राप्त कर सकते हैं।

शहर	व्यक्ति	फोन
कोलकाता (प.बं)	पं. बृजेश पाण्डेय	09331892199
बेंगलूरू (कर्नाटक)	पं. प्रदीप झा	09341054545
कानपुर (उ.प्र.)	श्रीअजित ओझा	09336774319
पटना (बिहार)	श्रीशरद चन्द्र	09334499000
रायपुर (छ.ग)	श्रीअगेश कुमार	09300484749
अहमदाबाद (गुजरात)	श्रीबकुल प्रसाद	09377127614
सम्भलपुर (उड़ीसा)	श्रीसंतोष कुमार	09337751000
जमशेदपुर (झारखण्ड)	श्रीमुक्तेश्वर प्रसाद	09334316280

इसके अतिरिक्त समस्त भारत से भक्तजन कोलकाता शाखा से सम्पर्क कर सकते हैं।

श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान (कोलकाता शाखा)
26, बड़तल्ला स्ट्रीट, तृतीय तल, कोलकाता
Tel:- 9330381000, 9331033090

श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
द्वारा संचालित
सेवा प्रकल्प

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय पं. श्रीकृष्ण चन्द्र शास्त्री द्वारा संरक्षित श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान, पूर्णतया कृष्ण सेवा के लिए समर्पित है। श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान की आधार शाखा श्रीठाकुर जी के निवास स्थान श्रीभागवत कृपा निकुंज, रमणरेती, वृन्दावन में अवस्थित है, जहाँ से विभिन्न प्रकार के सेवा प्रकल्पों का संचालन किया जाता है।

विभिन्न सेवाएँ :

1, श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान, वृन्दावन की अपनी सत्संग–शाला है, जो कि श्रीभागवत कृपा निकुंज के भूतल में अवस्थित है, यहाँ श्रीठाकुर जी भागवत प्रचार–प्रसार के लिए समय–समय पर श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ एवं विभिन्न प्रकार के सत्संग ज्ञान यज्ञ का आयोजन करते रहते हैं।

2. परिक्रमा मार्ग, रमणरेती स्थित 'श्रीभागवत धाम' में श्रीठाकुर जी विद्यार्थियों को समय–समय पर भागवत शिक्षा का पाठ पढ़ाते हैं। यह श्रीमद्भागवत विद्यालय है जिसकी पूरी देख रेख श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान करता है।

3. ब्रज एवं गिरिराज के सौंदर्यीकरण के लिए श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष अष्टोत्तरसहस्र 1008 श्रीमद्भागवत कथा का विशाल आयोजन होता है। इस वर्ष 26 फरवरी से यह आयोजन श्रीधाम वृन्दावन में हुआ। इस आयोजन से बची राशि से वृक्षारोपण, पेयजल व्यवस्था, मार्ग सौन्दर्यीकरण का कार्य श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान द्वारा प्रतिपादित होता है।

4. श्रीराधा–माधव की कृपा से 'श्री भागवत आतिथेयम्' का निर्माण बड़े जोर पर है। प्रभु कृपा रही तो श्रीठाकुर जी इसका शुभोद्घाटन शीघ्र ही करेंगे। इस तीन मंजिले भागवत आतिथेयम् में वृन्दावन आने वाले भक्तों के ठहरने का उत्तमोत्तम प्रबन्ध होने जा रहा है। रमणरेती मार्ग पर श्रीभागवत कृपा निकुंज के ठीक सामने एवं फोगला आश्रम से ठीक पहले यह निर्माण हो रहा है।

5. श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान के तत्वावधान में श्रीठाकुरजी समय–समय पर भारत के विभिन्न वनवासी, पिछड़े या प्राकृतिक आपदाओं से ग्रसित क्षेत्रों के लिए निःशुल्क श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन करते हैं, जिससे प्राप्त राशि उन क्षेत्रों की सेवाओं पर समर्पित होती है।

6. श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान समय–समय पर सामूहिक यज्ञोपवीत एवं वैवाहिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है। जिसका जरूरत मंद भक्त लाभ उठा सकते हैं।

7. वृन्दावन स्थित श्रीभागवत गौशाला में गोपालन बड़े ही श्रद्धाभाव से होता रहता है।

8. अप्रैल 2009 में कलकत्ता प्रवास के मध्य श्रीठाकुर जी ने 'श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान' की कोलकाता शाखा का शुभोद्घाटन किया जो कि भारत के पूर्वी क्षेत्रों में आयोजित संस्थान के कार्यक्रमों की देखभाल करेगी।

आप किसी भी रूप से इस संस्थान से जुड़ना चाहते हैं, तो सम्पर्क कर सकते हैं–

पं. लक्ष्मीकान्त शर्मा, वृन्दावन
9837008073

पं. बिष्णु पाठक सारस्वत, कोलकाता
9331033090

क्रूज़ यात्रा

श्रीमद्भागवत सप्ताह

भागवतप्रेमी भक्तगण,

जय श्रीकृष्ण! विगत कुछ समय से भक्तगणों एवं शिष्यों की आकांक्षा थी कि प्रभु सेवा में एक भागवत कथा जलधि (सागर) पर भी होनी चाहिए। भक्तों की अभिलाषा एवं प्रभु की कृपा के फलस्वरूप आगामी वर्ष पुण्यतम पुरुषोत्तम मास में 10 अप्रेल से 19 अप्रेल के मध्य श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान, वृन्दावन की सन्निधि में क्रूज़ स्टार वर्गो पर पूरे सात दिनों तक श्रीमद्भागवत कथा ज्ञानयज्ञ का भव्य आयोजन होने जा रहा है।

पुरुषोत्तम मास में भागवत कथा का श्रवण एवं वह भी सागर पर, यह तो बड़ा ही मनोरम, स्वर्णिम एवं पुण्यतम क्षण होगा। इतने बड़े आयोजन का कार्य भार देने के पूर्व सारी बातों का ध्यान रखते हुए मैंने इस पूरे कथायज्ञ की यात्रा प्रबंधन की जिम्मेदारी श्रीमान् मनोज सर्राफ के सुपुर्द की है।

श्री मनोज सर्राफ का नाम यात्रा–प्रबन्धन के क्षेत्र में नया नहीं है। आप **"गेनवेल इन्टर प्राइजेज प्रा. लि."** के मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं एवं ख्याति प्राप्त व्यावसायिक समूह से आपका सम्बन्ध है। धर्म नगरी कोलकाता में आपका निवास है। व्यावसायिक यात्रा–प्रबन्धन में तो आप माहिर हैं ही अपितु धर्म में आपकी विशेष आस्था होने के कारण आप धार्मिक (राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय) यात्रा प्रबंधनों में विशेष रुचि रखते हैं। भारत में तो लगभग सभी तीर्थ स्थलों पर आपके द्वारा समय समय पर यात्रा प्रबंधन होता ही रहता है अपितु 2008 एवं 2009 में आपकी कम्पनी ने क्रूज पर क्रमशः सिंगापुर एवं अलास्का में दो बृहत् भागवत कथाओं का सफलता पूर्वक प्रबन्धन किया है।

विगत 18 वर्षों में यात्रा प्रबन्धन के क्षेत्र में दक्षता के पीछे इनकी पत्नी सौ. **मधुलिका सर्राफ** एवं प्रबन्धक **चि. मनदीप** का भी विशेष सहयोग रहा है। यात्रा के दौरान शुद्ध भोजन, स्वच्छ व्यवस्था, सरल एवं मृदु भाषा युक्त सेवा इनकी क्षमता भरी पहचान है।

प्रभु बाँके बिहारी की कृपा रही तो 10 अप्रेल से 19 अप्रेल तक होने वाली भागवत कथा का भी ये पूरी जिम्मेदारी के साथ आयोजन करने में सफल होंगे। मेरी ओर से गेनवेल ग्रुप के सभी सदस्यों को हृदय से आशीष एवं इनके स्वर्णिम भविष्य के लिये राधामाधव से मंगल कामना।

जय श्रीकृष्ण

– श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री (ठाकुर जी)

सादर आमंत्रण

10 से 19 अप्रैल 2010

श्रीमद्भागवत सप्ताह

साथ में

सिंगापुर • मलेशिया • थाइलेण्ड

के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण

Payment in Favour of
Bhagwat on Sea - A unit of GEPL
ICICI Bank A/c No. :
105605000168

PLEASE REGISTER BEFORE
15th NOVEMBER 2009 BY
PAYING Rs. 25000/- PER PERSON.

कृपया 15 नवम्बर से पहले
रु. 25000/– प्रति व्यक्ति
देकर आरक्षण करवायें

वार	दिनांक	स्थान
शनिवार	10 अप्रेल 2010	भारत से प्रस्थान
रविवार	11 अप्रेल 2010	सिंगापुर से क्रूज़ यात्रा प्रारम्भ
सोमवार	12 अप्रेल 2010	क्रूज़ – फुकेट (थाईलैण्ड)
मंगलवार	13 अप्रेल 2010	क्रूज़ – लंकावी (मलेशिया)
बुधवार	14 अप्रेल 2010	क्रूज़ – सिंगापुर
वृहस्पतिवार	15 अप्रेल 2010	क्रूज़ – पुलाव रेडांग (मलेशिया)
शुक्रवार	16 अप्रेल 2010	क्रूज़ – सिंगापुर
शनिवार	17 अप्रेल 2010	क्रूज़ – पोर्ट क्लांग (मलेशिया)
रविवार	18 अप्रेल 2010	सिंगापुर (क्रूज़ समाप्त)
सोमवार	19 अप्रेल 2010	भारत वापसी

यात्रा सेवा राशि

Room Category	Per Person
Inside State Room	Rs. 98000/-
Window	Rs. 108000/-
Balcony	Rs. 128000/-

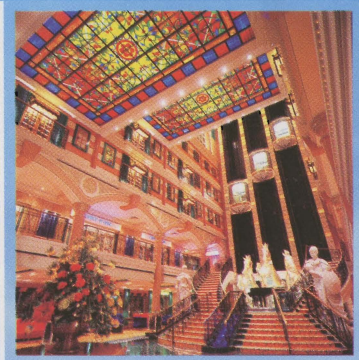

यात्रा प्रबन्धक–

GAINWELL Leisure Holidays

religious tours

आयोजक : श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान (अन्तर्राष्ट्रीय) वृन्दावन

पुरुषोत्तम मास के पावन एवं स्मरणीय अवसर पर
सिंगापुर से सुपर स्टार वर्गो, क्रूज़ पर

भागवत भास्कर पं. श्री कृष्णचन्द्र शास्त्री (श्रीठकुरजी) द्वारा

श्रीमद्भागवत कथा

का भव्य आयोजन

साथ में मलेशिया, थाइलेण्ड एवं
सिंगापुर के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण
10 अप्रेल से 19 अप्रेल 2010

कोलकाता	बेंगलुरु	वृन्दावन	कटक	दिल्ली
श्रीविष्णु पाठक	श्रीप्रवीण पोद्दार	श्रीसौरभ गौड	श्रीदेवकीनन्दन जोशी	श्रीराकेश–मीना अग्रवाल
9331033090	9845165217	9837164790	9437026760	9873646469
श्रीसुभाष मुरारका	पटना	सूरत	नागपुर	श्रीओम प्रकाश बागला
9831011009	श्रीशरद चन्द्र	श्रीराजकुमार कोकड़ा	श्रीराम कुमार अग्रवाल	9810969812
श्रीमहेन्द्र केजरीवाल	9334499000	9824101558	9373106611	श्रीप्रकाश खेतावत
9831015439	मुम्बई	सिलिगुड़ी	गोरखपुर	9311165686
श्रीप्रदीप झुनझुनवाला	श्रीप्रदीप पोद्दार	श्रीअमित गोयल	श्रीविजय मोदी	श्रीविकास खन्ना
9831226509	9324612660	9831095113	9793162888	9311138588
			रायपुर	यमुनानगर
			श्रीअगेश कुमार	श्रीराजेश मित्तल
			9300484749	9896340703

कार्यालय : श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
श्रीभागवतकृपा निकुंज, रमणरेती मार्ग, वृन्दावन-281121 (मथुरा)

सदस्यता शुल्क– पंचवर्षीय : 500 रुपये ● आजीवन : 1500 रुपये ● एक प्रति : 20 रुपये

Harinam 9837031415